संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
ऋषि प्रसाद
हिन्दी
मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक :
१ मई २०१४
वर्ष : २३ अंक : ११
(निरंतर अंक : २५७)
संतों का कुप्रचार
करके समाज की श्रद्धा तोड़ने व
उसे भ्रमित करने तथा संतों को सताने का नीच
कर्म संस्कृतिद्रोही सदियों से करते आये हैं पर हमेशा उन्हें
दुत्कार और दुर्गति ही हाथ लगी है । जबकि संतों का यशोगान करके तो
आज भी असंख्य लोग ईश्वरीय आनंद, शांति और ज्ञान पाकर उन्नत हो रहे हैं ।
घर में धनात्मक ऊर्जा व सुख-शांति, समृद्धि हेतु सरल प्रयोग
पृष्ठ २२
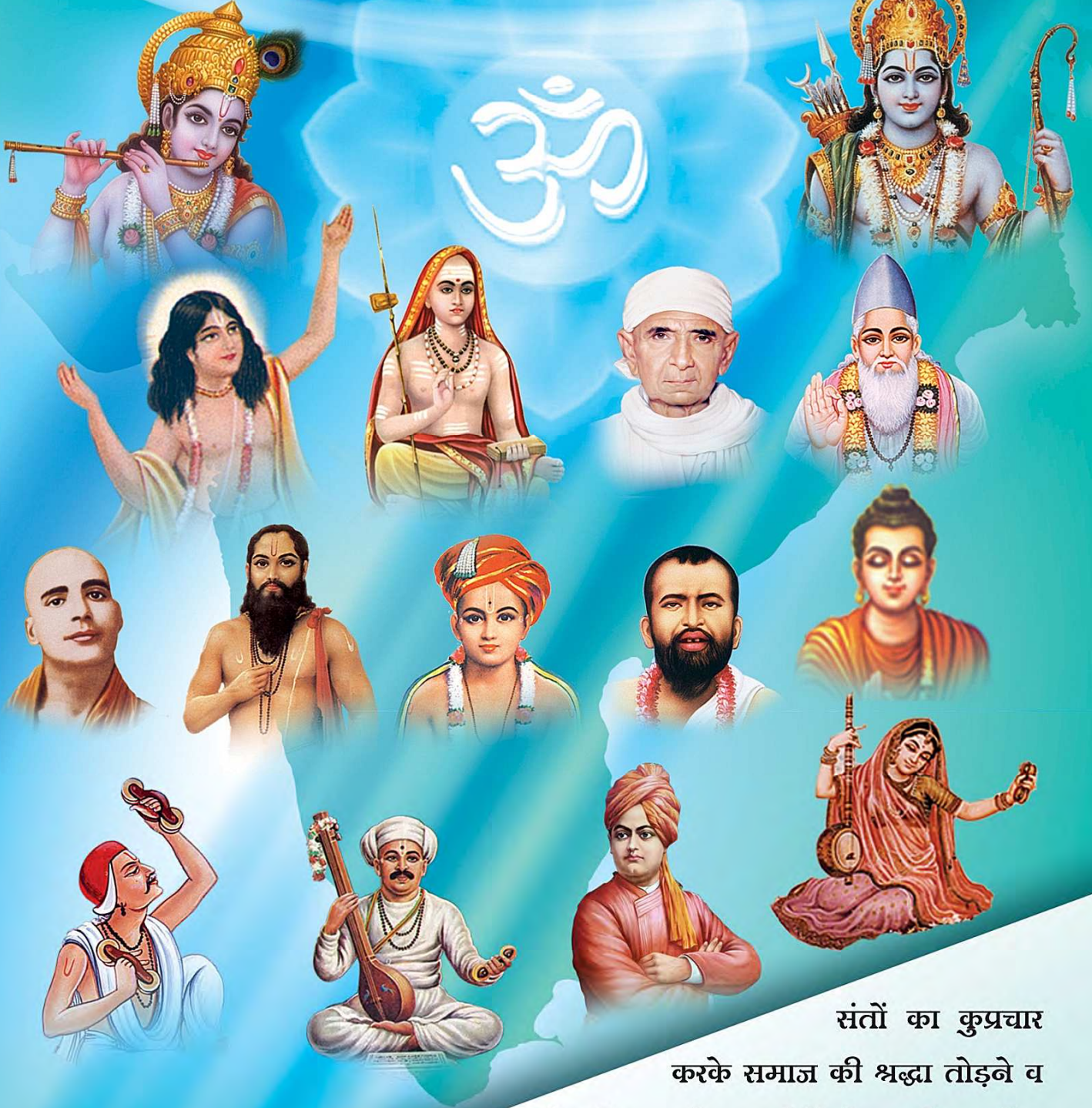
जहाँ संत वहाँ सत्य, जहाँ सत्य वहाँ जय !

स्वामी विवेकानंदजी

अत्याचार : ईसाई मिशनरियों तथा उनकी कठपुतली बने प्रताप मजूमदार द्वारा दुश्चरित्रता, स्त्री-लम्पटता, ठगी, जालसाजी, धोखेबाजी आदि आरोप लगा के अखबारों आदि के द्वारा बहुत बदनामी की गयी।

परिणाम : काफी समय तक उनकी जो निंदाएँ चल रही थीं, उनका प्रतिकार उनके अनुयायियों ने भारत में सार्वजनिक सभाएँ आयोजित करके किया और अंत में स्वामी विवेकानंदजी के पक्ष की ही विजय हुई।

(संदर्भ : युगनायक विवेकानंद, लेखक - स्वामी गम्भीरानंद, पृष्ठ १०९, ११२, १२१, १२२)

महात्मा बुद्ध

अत्याचार : सुंदरी नामक बौद्ध भिक्षुणी के साथ अवैध संबंध एवं उसकी हत्या के आरोप लगाये गये और सर्वत्र घोर दुष्प्रचार हुआ।

परिणाम : उनके शिष्यों ने सुप्रचार किया। कुछ समय बाद महात्मा बुद्ध निर्दोष साबित हुए। लोग आज भी उनका आदर-सम्मान करते हैं।

(संदर्भ : लोक कल्याण के व्रती महात्मा बुद्ध, लेखक - पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, पृष्ठ २५)

संत कबीरजी

अत्याचार : अधर्मी, शराबी, वेश्यागामी आदि कई घृणित आरोप लगाये गये और बादशाह सिकंदर के आदेश से कबीरजी को गिरफ्तार किया गया और कई प्रकार से सताया गया।

परिणाम : अंत में बादशाह ने माफी माँगी और शिष्य बन गया।

(संदर्भ : कबीर दर्शन, लेखक - डॉ. किशोरदास स्वामी, पृष्ठ ९२ से ९६)

संत नरसिंह मेहताजी

अत्याचार : जादू के बल पर स्त्रियों को आकर्षित कर उनके साथ स्वेच्छा से विहार करने के आरोप लगा के खूब बदनाम व प्रताड़ित किया गया।

परिणाम : नरसिंह मेहताजी निर्दोष साबित हुए। आज भी लाखों-करोड़ों लोग उनके भजन गाकर पवित्र हो रहे हैं। (संदर्भ : भक्त नरसिंह मेहता, पृष्ठ १२९, प्रकाशन - गीताप्रेस)
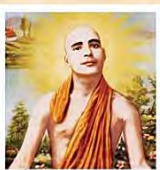
स्वामी रामतीर्थ

अत्याचार : पादरियों और मिशनरियों ने लड़कियों को भेजकर दुश्चरित्र सिद्ध करने के षड्यंत्र रचे और खूब बदनामी की। जान से मार डालने की धमकी एवं अन्य कई प्रताड़नाएँ दी गयीं।

परिणाम : स्वामी रामतीर्थजी के सामने बड़े-बड़े मिशनरी निरुत्तर हो गये। उनके द्वारा प्रचारित वैदिक संस्कृति के ज्ञान-प्रकाश से अनेकों का जीवन आलोकित हुआ।

(संदर्भ : राम जीवन चित्रावली, रामतीर्थ प्रतिष्ठान, पृष्ठ ६७ से ७२)

संत ज्ञानेश्वर महाराज

अत्याचार : कई वर्षों तक समाज से बहिष्कृत करके बहुत अपमान व निंदा की गयी। इनके माता-पिता को २२ वर्षों तक कभी तृण-पत्ते खाकर और कभी केवल जल या वायु पी के जीवन-निर्वाह करना पड़ा। ऐसी यातनाएँ ज्ञानेश्वरजी को भी सहनी पड़ीं।

परिणाम : लाखों-करोड़ों लोग आज भी संत ज्ञानेश्वरजी द्वारा रचित 'ज्ञानेश्वरी गीता' को श्रद्धा से पढ़-सुन के अपने हृदय में ज्ञान-भक्ति की ज्योति जगाते हैं और उनका आदर-पूजन करते हैं।

(संदर्भ : श्री ज्ञानेश्वर चरित्र और ग्रंथ विवेचन, लेखक - ल.रा. पांगारकर, पृष्ठ ३२, ३३, ३८)

भक्तिमती मीराबाई

अत्याचार : चरित्रभ्रष्टता का आरोप लगाया गया। कभी नाग भेजकर तो कभी विष पिला के, कभी भूखे शेर के सामने भेजकर तो कभी तलवार चला के जान से मारने के दुष्प्रयास हुए।

परिणाम : जान से मारने के सभी दुष्प्रयास विफल हुए। मीराबाई के प्रति लोगों की सहानुभूति बढ़ती गयी। उनके गाये पदों को पढ़-सुनकर एवं गा के आज भी लोगों के विकार मिटते हैं, भक्ति बढ़ती है।

(संदर्भ : मीरां दर्शन - जीवनी तथा भजन, ले. लालसिंह शक्तावत, पृष्ठ १५, मीराबाई, ले. प्राणनाथ वानप्रस्थी, पृष्ठ २७ से ३२)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़,अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : ११
भाषा : हिन्दी(निरंतर अंक : २५७)
प्रकाशन दिनांक : १ मई २०१४
मूल्य : ₹ ६
वैशाख-ज्येष्ठ वि.सं. २०७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३०० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६०० / -
(३) पंचवार्षिक: ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क
'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

अशुभ से लोहा लेना चाहिए

- पूज्य बापूजी

(शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी की रिहाई के बाद १९ जनवरी २००५ को हुए सत्संग से)

जब-जब अन्याय हुआ तो संतों ने ही लोहा लिया है। अंग्रेज इतना अन्याय करते थे तो संतों की प्रेरणा से ही लोगों में जागृति आयी और फिर गांधीजी भी तैयार हो गये। स्वामी रामतीर्थ का संकल्प, विवेकानंदजी का संकल्प, ऋषि दयानंदजी आदि का संकल्प...

एक संत को वाइसरॉय ने बुलाया कि ''आपके सत्संग ठीक होते हैं न ? हमारे ब्रिटिश शासन में आपको कोई समस्या तो नहीं ?''

संत बोले : ''नहीं, सब ठीक होता है।''

''तो आप सत्संग के बाद प्रार्थना किया करो न, कि 'ब्रिटिश शासन भारत में रहे।' ये सब लोग भारत की आजादी-आजादी... सब बकवास कर रहे हैं।''

''यह तो नहीं हो सकता है। मैं यह कह सकता हूँ कि ब्रिटिश शासन का खात्मा जल्दी हो । भारत आजाद हो।''

शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी को फँसाया जा रहा था तो हम लोगों ने इसके विरोध में दिल्ली में एक दिन का सत्याग्रह किया था । उस समय ८०-९० प्रतिशत लोग बोलते थे कि ''बापूजी ने बहुत बढ़िया किया'', ५-१० प्रतिशत लोग होते हैं न, कि ''संतों को यह सब करने की क्या जरूरत है ?'' अरे ! तुम क्या सिखाते हो कि 'संतों को यह नहीं करना चाहिए, वह नहीं करना चाहिए...' तुम्हारी बेचारी पहुँच क्या ! तुम अपना ही घर, अपना ही दिल सँवार लो तो बहुत है।

हम तो बैठ गये सत्याग्रह में । शंकराचार्यजी के खिलाफ १-२ दिन पहले कुछ लोगों ने बयान दिये थे

कि ''उनको अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए जब तक निर्दोष साबित नहीं होते।'' जब हम लोग सत्याग्रह पर बैठे तो जो मनचाहे बयान देते थे, उन सबके तेवर बदल गये। आप भगवत्प्रेरणा से कोई कार्य करते हो तो दुनिया फिर उसके अनुसार पटरी बदलने को तैयार हो जाती है। इसका अर्थ यह नहीं कि हमने सत्याग्रह किया उसीसे हो गया, नहीं। फिर भी कोई अच्छा कार्य शुरू करता है तो भगवान की दया से सब लोगों का सहयोग मिल जाता है। इसीलिए बुरे से लोहा लेना चाहिए। कोई आदमी पीड़ित हो रहा हो और अन्याय होता हो तो आपका जितना भी बस चलता है, बुद्धिपूर्वक, धैर्यपूर्वक अशुभ से लोहा लेकर शुभ की मदद करनी चाहिए।

आजकल बहुत झूठे केस हो जाते हैं। शत्रुता से या किसी कारण से अथवा दहेज के बहुत झूठे केस होते हैं। कई बार तो निर्दोष लोग खून के केस में झूठे फँसाये जाते हैं। कोई झूठा फँस गया हो तो उसको बचाने के लिए शुभ संकल्प करें, मंत्रजप करना चाहिए तो वह बच जायेगा, निर्दोष छूट जायेगा।

जैसे शंकराचार्यजी के लिए जब तूफान चला तो वहाँ अशुभ भावनावाली टोली कम नहीं थी लेकिन जब शुभ भावना के संकल्प ने जोर पकड़ा तो अशुभ दबा। अशुभ से लोहा लेने के लिए शुभ लोगों को संगठित होना चाहिए, आवाज उठानी चाहिए। संसार है, शुभ-अशुभ चलता रहता है। अशुभ से दबो मत और शुभ का अभिमान करो मत। पक्षपात नहीं करो, सत्य का आश्रय लो। प्रीतिपूर्वक भगवान का जप करो और जब संसार की कोई समस्या सुलझानी हो तो विश्वासपूर्वक चिंतन करो कि 'यह काम होगा, भगवान जानते हैं। मैं निर्दोष हूँ अथवा फलाना निर्दोष है, छूटेगा ही।' ऐसा संदेह न करो कि 'छूटेगा कि नहीं ? अपना क्या ? मैं दिल्ली में उपवास करूँ और वे मद्रास में हैं, उनको लाभ होगा कि नहीं ?' अरे ! हम बैठे हैं तो संकल्प जायेगा, देर-सवेर रंग आयेगा तो पूरे हिन्दुस्तान में रंग आ गया। आपका इरादा पक्का होना चाहिए और स्वार्थ नहीं होना चाहिए बस। हमें तो संतोष है कि हमने जयेन्द्र सरस्वतीजी के लिए अन्याय के खिलाफ जो धरना दिया था वह सार्थक हो गया।

निंदा-स्तुति से जुड़ो नहीं प्रभु के साथ रहो

करोड़ों लोग यशगान करते हैं तो हजारों लोग थोड़ी निंदा कर लेंगे तो क्या है ! लाखों या करोड़ों भी निंदा कर लेंगे तो क्या है ! जिसकी स्तुति हुई उसकी निंदा हुई, हम तो अपने-आप, प्रभु के साथ। यह इसीलिए बता रहा हूँ कि आप भी मजबूत बन जाओ, गंदी, झूठी अफवाह से डरो नहीं। बोले : 'झूठ-मूठ में मेरी बेइज्जती कर दी...' कर दी तो कर दी। जिसकी कर दी वह शरीर है, अगर सचमुच में की तो तू बुराई से बच जा और झूठा आरोप किया है तो करने दे, उनका तो धंधा है। वे तो ब्लैकमेलिंग करने के लिए, पैसे नोंचने के लिए अखबारों में, चैनलों में किसीको भी निंदा का शिकार बना देते हैं, ऐसे क्या डरना ! जरा-जरा बात में डरने की क्या जरूरत है !

अपनी तरफ से बुरा नहीं करते फिर कोई बुराई थोप दे तो क्यों डरना ? मजबूत बनो। आपकी इज्जत, आपका मनोबल ऐसा क्या कि ५-२५ आदमी बेईमानी या द्वेष से आपकी निंदा करें और आप तुच्छ हो जाओ। आप ऐसे तुच्छ नहीं हो। और ५०-१०० चमचे आपकी वाहवाही करें और आप बड़े हो गये, इसमें भी भोले नहीं पड़ो। **यह संसार है, हम हैं अपने आप, प्रभु के साथ निंदा में, स्तुति में। बस, यह मंत्र पक्का रखो।** 'जन्म के पहले प्रभु के साथ थे, अभी भी प्रभु के साथ हैं, निंदा और स्तुति सब आयी-गयी, हम तो प्रभु के साथ। प्रभु हम तुम्हारे साथ हैं न ? हैं न ? हैं न ? दे ताली, ले मजा !' इतना तो यार सीख लो तुम, कम-से-कम जितना ट्रक ड्राइवर ट्रक के पीछे लिख के चलते हैं, 'बुरी नजरवाले तेरा मुँह काला।' आजकल ऐसा ही है, सूझबूझ से जीना पड़ेगा। और जितना आप इन चीजों से डरोगे उतना वे ब्लैकमेलिंगवाले आपकी नस जान जायेंगे, आपको

संस्कृति-रक्षक महापुरुषों पर कितने हुए प्रहार !

जिस समय इस देश में आद्य शंकराचार्यजी का आविर्भाव हुआ था उस समय असामाजिक तत्त्व अनीति, शोषण, भ्रम तथा अनाचार के द्वारा समाज को गलत दिशा में ले जा रहे थे। समाज में फैली इस अव्यवस्था को देखकर बालक शंकर का हृदय काँप उठा। उसने प्रतिज्ञा की कि 'मैं राष्ट्र के धर्मोद्धार के लिए अपने सुख की तिलांजलि देता हूँ। अपने श्रम और ज्ञान की शक्ति से राष्ट्र की आध्यात्मिक शक्तियों को जागृत करूँगा। चाहे उसके लिए मुझे सारा जीवन साधना में लगाना पड़े, घर छोड़ना पड़े अथवा घोर-से-घोर कष्ट सहने पड़ें, मैं सदैव तैयार रहूँगा।'

बालक शंकर माँ से आज्ञा लेकर चल पड़े अपने संकल्प को साधने। उन्होंने सद्गुरु स्वामी गोविंदपादाचार्यजी से दीक्षा ली। इसके बाद वे साधना एवं वेद-शास्त्रों के गहन अध्ययन से अपने ज्ञान को परिपक्व कर बालक शंकर से जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य बन गये। शंकराचार्यजी अपने गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त कर देश में वेदांत का प्रचार करने चल पड़े। भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसों को भी दुष्टों के उत्पीड़न सहने पड़े तो आचार्य उससे कैसे बच पाते ? शंकराचार्यजी के धर्मकार्य में विधर्मी हर प्रकार से रुकावट डालने का प्रयास करने लगे, कई बार उन पर मर्मांतक प्रहार भी किये गये।

कपटवेशधारी उग्रभैरव नामक एक दुष्ट व्यक्ति ने आचार्य की हत्या के लिए शिष्यत्व ग्रहण किया। आचार्य को मारने की उसकी साजिश विफल हुई और अंततः वह भगवान नृसिंह के प्रवेश अवतार द्वारा मारा गया।

कर्नाटक में बसनेवाली कापालिक जाति का मुखिया था क्रकच। वह मांस-शराब आदि अनेक दुराचारों में लिप्त था। कर्नाटक की जनता उसके अत्याचारों से त्रस्त थी। आचार्य शंकर के दर्शन, सत्संग एवं सान्निध्य के प्रभाव से लोग कापालिकों द्वारा प्रसारित दुर्गुणों को छोड़ने लगे और शुद्ध, सात्त्विक जीवन की ओर आकृष्ट होने लगे। सैकड़ों कापालिक भी मांस-शराब को छोड़कर शंकराचार्यजी के शिष्य बन गये। इस पर क्रकच घबराया। उसने शंकराचार्यजी का अपमान किया, गालियाँ दीं और वहाँ से भाग जाने को कहा। शंकराचार्यजी ने उसके विरोध की कोई परवाह नहीं की और अपनी संस्कृति का, अपने धर्म का प्रचार-प्रसार निष्ठापूर्वक करते रहे। इस पर क्रकच ने उन्हें मार डालने की धमकी दी। उसने बहुत-से दुष्ट शिष्यों को शराब पिलाकर शंकराचार्यजी को मारने हेतु भेजा। धर्मनिष्ठ राजा सुधन्वा को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने अपनी सेना को भेजा और युद्ध में सारे कापालिकों को मार गिराया।

अभिनव गुप्त भी एक ऐसा ही महामूर्ख था जो आचार्य के लोक-जागरण के कार्यों को बंद कराना चाहता था। वह भी अपने शिष्योंसहित आचार्य से पराजित हुआ। वह दुराभिमानी, प्रतिक्रियावादी, ईर्ष्यालु स्वभाव का था। कपट भाव से वह शिष्योंसहित शंकराचार्यजी का शिष्य बन गया। आचार्य के प्रति षड्यंत्र करने लगा। दैवयोग से उसे भगंदर का रोग हो गया और कुछ ही दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

इस संसार में ईर्ष्या और द्वेषवश जिसने भी महापुरुषों का अनिष्ट करना चाहा, देर-सवेर दैवी विधान से उन्हींका अनिष्ट हो जाता है। संतों-महापुरुषों की निंदा करना, उनके दैवी कार्य में विघ्न डालना यानी खुद ही अपने अनिष्ट को आमंत्रित करना है। उग्रभैरव, क्रकच व अभिनव गुप्त का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

- श्री आर.एन. ठाकुर

विकास और सफलता के लिए आवश्यक : मातृभाषा व हिन्दी की प्रमुखता

राजस्थान पत्रिका। कुछ सप्ताह पहले इटावा शहर में 'हिन्दी सेवा ट्रस्ट' द्वारा आयोजित एक समारोह में देश के कई विद्वान, बड़ी हस्तियाँ एवं नॉर्थ वेस्टर्न यूनिवर्सिटी (अमेरिका) के अतिथि प्रोफेसर सम्मिलित हुए। इस सभा में एक संसद-सदस्य ने कहा : ''जो देश अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं वे ज्यादा विकसित हैं। अतः हमारे देश में संसद-सदस्यों द्वारा संसद को अंग्रेजी में सम्बोधित करने पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए।'' उन्होंने यह भी कहा कि वे अंग्रेजी के खिलाफ नहीं हैं लेकिन भारत में अंग्रेजी बोलनेवाले लोग अभिमान महसूस करते हैं और अपने-आपको दूसरों से श्रेष्ठ समझते हैं।

इस बात से सभी सहमत होंगे क्योंकि चीन, जापान, जर्मनी और दक्षिण कोरिया जैसे बड़े देशों ने अपनी खुद की भाषा को आधार रखते हुए और अंग्रेजी भाषा को मात्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में इस्तेमाल करते हुए अपार सफलता और नेतृत्व हासिल किया है। अंग्रेजी के अनुकरणकर्ताओं द्वारा हमेशा ही दिया जानेवाला तर्क कि 'सफलता के लिए अंग्रेजी भाषा में प्रवीणता पहली आवश्यकता है' यह एक बहुत बड़ी बकवास और वैश्विक दृष्टि से निराधार बात है।

दरार बढ़ाती अंग्रेजी

भारत में हमें यह तो मानना पड़ेगा कि जो लोग अंग्रेजी में प्रवीण हैं, वे अपने-आपको उन लोगों से ऊँचा समझते हैं, जिन्हें अंग्रेजी नहीं आती। यह नस्लभेद का ही एक अनोखा रूप है और अनजाने में अंग्रेजी में प्रवीण लोगों द्वारा इसे बढ़ावा भी दिया जाता है। इसने समाज में गम्भीर रूप से दरार डाल दी है। इससे अपनी मातृभाषाओं में प्रवीण लोग अपने-आपको पिछड़ा हुआ और सम्भ्रमित महसूस करते हैं। इस भाषा-आधारित नस्लभेद की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कीमत बहुत बड़ी है और कई मायनों में देश के विकास को रोके रखने का बहुत बड़ा कारण भी बनी हुई है।

अंग्रेजी नहीं है जनसामान्य की भाषा

भारत में लोगों की दैनिक भाषा प्रायः उनकी मातृभाषा या हिन्दी ही है। इन भाषाओं की अपेक्षा अंग्रेजी की लोकप्रियता भारत में कितनी कम है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण ये निम्नलिखित आँकड़े दर्शाते हैं जो अखबार पाठकों और टेलीविजन दर्शकों के सर्वेक्षण द्वारा लिये गये कि वे लोग प्रायः किस भाषा में अखबार पढ़ना और टेलीविजन देखना पसंद करते हैं :

अनुपात	अखिल भारतीय स्तर पर	शीर्ष ८ महानगरों में	दिल्ली में	पुणे में	अहमदाबाद में	उत्तर प्रदेश में	महाराष्ट्र में	पश्चिम बंगाल में	तमिलनाडु में	चेन्नई में
अखबार पाठक	९:१	२:१	१:१	७.५:१	११:१	--	--	--	--	--
टीवी दर्शक	१४:१	१२:१	१९:१	--	अंग्रेजी के नगण्य दर्शकगण	१३:१	१३:१	९:१	६:१	७:१

टिप्पणी : पहला आँकड़ा गैर-अंग्रेजी भाषाओं का है और दूसरा अंग्रेजी भाषा का। (९:१ में ९ गैर-अंग्रेजी तथा १ अंग्रेजी)

इससे यह बात साफ हो गयी कि अंग्रेजी के साथ वैसा ही व्यवहार होना चाहिए जैसा कि वह है - 'भारत की कई भाषाओं में से एक, बिना किसी विशेष स्थान के।' परंतु देश की आम जनता यहाँ हो रहे भाषा-आधारित नस्लभेद के कारण पीछे रह जाने से एक बहुत बड़ी कीमत चुका रही है। इस पर गम्भीर रूप से अध्ययन और चर्चा होनी चाहिए। (क्रमशः)

सर्वफलप्रद साधन : भगवन्नाम-जप

- पूज्य बापूजी

भगवन्नाम का बड़ा भारी प्रभाव है । सारे पापों के समूह को नाश करनेवाला है भगवान का नाम । जैसे लकड़ी में अग्नि तो व्याप्त है लेकिन छुओ तो वह गर्म नहीं लगेगी, वातावरण के अनुरूप लगेगी । सर्दी में सुबह-सुबह लकड़ी को छुओ तो ठंडी लगती है । आँखों से अग्नि दिखेगी नहीं, छूने से भी महसूस नहीं होगी लेकिन लकड़ी में अग्नि छुपी है । घर्षण करने से जैसे सूखे, ठंडे बाँस में जो अग्नि तत्त्व छुपा है, वह प्रकट हो जाता है । ऐसे ही ध्रुव को नारदजी ने मंत्र दिया और कह दिया : ''बेटा ! मधुबन में जाकर पहले वैखरी से बाद में धीरे-धीरे मध्यमा - होंठों में फिर कंठ में... ऐसे करते-करते अर्थसहित जप में लीन हो जाओगे तो तुम्हारी संकल्पशक्ति, हरि-आवाहनशक्ति जागृत होगी । तुम्हारा नारायण प्रकट होगा ।''

मंत्रजप से ही एकनाथजी महाराज, संत तुकारामजी महाराज और समर्थ रामदासजी ने सगुण-साकार को प्रकट कर दिया था । हरिनाम केवल सगुण-साकार को ही प्रकट नहीं करता बल्कि निर्गुण-निराकार की शांति, आनंद और मधुरता में विश्रांति दिला देता है । जैसे लकड़ी की रगड़ से आग पैदा होती है, ऐसे ही भगवान का नाम बार-बार लेने से भगवदीय सुख, भगवदीय शांति, भगवदीय ऊर्जा, भगवदीय आनंद प्रकट होता है ।

सब घट मेरा सांईयां, सूनी सेज न कोय ।
बलिहारी वा घट की, जा घट परगट होय ।।

अश्वमेध यज्ञ होते हैं, वाजपेय यज्ञ होते हैं, नवचंडी यज्ञ होते हैं, वृष्टिदायक यज्ञ होते हैं, कई प्रकार के यज्ञ होते हैं । उन सभी यज्ञों में भगवान कहते हैं : यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि ।

'यज्ञों में जपयज्ञ तो मेरा ही स्वरूप है ।'

जप अंतरंग साधन है । स्तोत्रपाठ करने से पुण्यमय भाव होता है लेकिन व्यक्ति बहिर्मुख ही रह जाता है । जप करने से पुण्यमय भाव के साथ-साथ व्यक्ति अंतर्मुख होने लगता है ।

संकल्प-विकल्प करते-करते मानसिक शक्तियों का क्षय होता है । जप-ध्यान करके संकल्प-विकल्प और क्रिया से थोड़ी-सी विश्रांति पा ले तो आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक शक्तियों का संचय होता है । रोगनाशिनी शक्ति जागृत होती है, हृदय पवित्र होता है । पाँचों शरीरों एवं ७२ करोड़ ७२ लाख १० हजार २०१ नाड़ियों की शुद्धि होती है ।

ऐसे निर्मल बने हुए साधक प्रभुनाम-स्मरण से जो रस पाते हैं, वह रस राज्यसुख में नहीं है । रामतत्त्व में, परमात्मतत्त्व में विश्रांति पाने से जो सुख मिलता है, जो आराम मिलता है, जो निर्द्वन्द्व और निःशंक शांति मिलती है, वह शांति, वह सुख, वह आराम स्वर्ग के भोगों में नहीं है, ब्रह्मलोक के सुख में नहीं है ।

साधक गलती यह करते हैं कि 'मेरा यह काम हो जाय फिर मैं आराम से भजन करूँगा । मैं इस तीर्थक्षेत्र में पहुँचकर निश्चिंत होकर भजन करूँगा ।' किसी जगह जाकर, कहीं रह के आप पूर्णता नहीं पायेंगे । पूर्णता

जिसमें है उस परमेश्वर के विषय में श्रवण कीजिये, मनन कीजिये। जिसमें पूर्ण सुख, पूर्ण ज्ञान, पूर्ण जीवन है, उस परमात्मा का जप-ध्यान करके आप उसमें विश्रांति पाइये, फिर आप जहाँ जायेंगे वहाँ आपके लिए काशी-क्षेत्र है, आप जिस वस्तु को छुएँगे वह प्रसाद हो जायेगी। आपके लिए सब दिन पूर्णमासी हो जायेंगे।

सूर्योदय से पहले नहा-धोकर बैठ जायें और भगवन्नामसहित श्वासोच्छ्‌वास की गिनती करें। रात्रि को सब चिंता-तनाव ईश्वरार्पण करके भगवन्नाम के साथ श्वासोच्छ्‌वास की गिनती करते-करते सो जायें तो रात भी ईश्वरीय शांति का धन कमाने में बीतेगी। इन सहज युक्तियों से दिन भी सफल और रात भी !

सुषुप्ति में होता है सत् से ऐक्य

- स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती
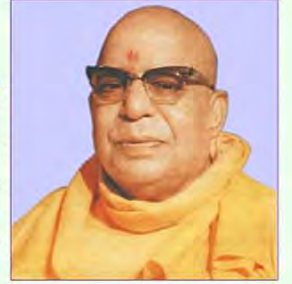
मन-बुद्धि के उपराम होने पर सत् का प्रतिबिम्ब जो जीवात्मा है, वह कहाँ चला जाता है ? वह अपने प्रकाशस्वरूप सत्-देवता में ही मिल जाता है। मन की उपशांति में आत्मा परमात्मा से एक हो जाता है। यही बात समझाने के लिए आरुणि ने कहा : ''तुम स्वप्नांत अर्थात् सुषुप्ति को मुझसे समझो । आत्मा को 'स्वपिति' कहते हैं । यह क्रियापद नहीं है, आत्मा का एक नाम है। वह अपने स्वरूप में अपीत अर्थात् स्थित हो जाता है। यह अवस्था स्वप्न से विलक्षण है क्योंकि जाग्रत, स्वप्न में वस्तुएँ दिखती हैं थोड़ी या घनी, क्षणभर या देर तक, वहाँ पाप-पुण्य का कार्य सुख-दुःख भी होता है। अतः जाग्रत के समान स्वप्न भी पाप-पुण्य, अविद्या, कामना आदि से युक्त होता है अन्यथा सुख-दुःख कहाँ से होते ? अतः स्वप्न में स्वरूप स्थिति नहीं होती। सुषुप्ति में न पाप-पुण्य रहते हैं न उनका फल। वह मन के सभी शोकों से ऊपर उठ जाता है। वहाँ जीवत्व भी नहीं रहता क्योंकि कर्ता-भोक्ता, संसारी, परिच्छिन्न ही जीव है और सुषुप्ति में यह सब कुछ नहीं रहता। जो सुषुप्ति में अपने साथ नहीं है वह अपना स्वरूप नहीं है । सुषुप्ति के समय सत् से एक हो जाता है । जाग्रत अवस्था में बहुत-से आयास-प्रयास करने पड़ते हैं, पाप-पुण्य के कारण सुख-दुःख भी होते हैं किंतु सुषुप्ति में यह सब छूट जाता है । मन, इन्द्रियाँ, प्राण श्रांत-क्लांत होकर शांत हो जाते हैं । लोकदृष्टि से यही स्वरूप-स्थिति है। रोगी को भी सुषुप्ति हो जाय तो विश्राम मिलता है परंतु मृत्यु की भ्रांति नहीं होती। इन्द्रियाँ सो जाती हैं, प्राण जागता रहता है।''

हम दुःखी क्यों हैं ?

(पूज्य बापूजी की बोधमयी अमृतवाणी)

लोग बोलते हैं हम दुःखी हैं, दुःखी हैं, दुःखी हैं लेकिन वेदांत कहता है दुःख का वजन कितना है ? ५० ग्राम, १०० ग्राम, २०० ग्राम, किलो, आधा किलो ? दुःख का कोई वजन देखा ? नहीं। दुःख का रंग क्या है ? कोई भी रंग नहीं। दुःख का रूप क्या है ? रूप भी कोई नहीं। दुःख की ताकत कितनी है ? उसकी अपनी ताकत भी कुछ नहीं। दुःख ईश्वर के पास भी नहीं है, दुःख हम चाहते भी नहीं हैं फिर भी हम दुःखी हैं । दुःख ईश्वर ने बनाया नहीं, दुःख प्रकृति ने बनाया नहीं । माँ बच्चे के लिए दुःख बनाती है क्या ? फिर बच्चे दुःखी क्यों होते हैं ? नासमझी से । स्कूल जाने में फायदा है लेकिन माँ वहाँ ले जाती है तो दुःखी होते हैं, क्यों ? बेवकूफी से। स्नान करने में फायदा है, माँ स्नान कराती है, साबुन लगाने से उनका मैल कटता है लेकिन ऊँऽऽऽ करते हैं । दुःखी होते हैं । तो नासमझी के सिवाय दुःख का न रंग है, न रूप है, न वजन है।

जिन्होंने सहे समाज के अनेक अत्याचार : संत ज्ञानेश्वरजी
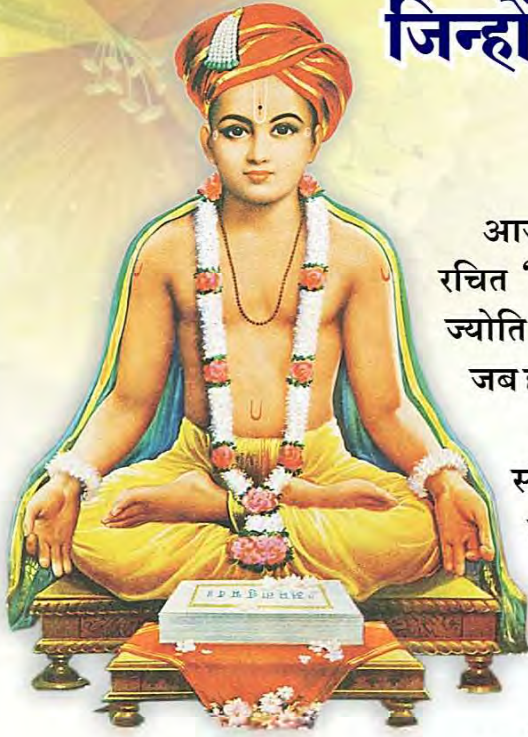
आज संत ज्ञानेश्वरजी को कौन नहीं जानता ! लाखों-करोड़ों लोग उनके द्वारा रचित 'ज्ञानेश्वरी गीता' को श्रद्धा से पढ़-सुन के अपने हृदय में ज्ञान-भक्ति की ज्योति जगाते हैं तथा उनका आदर-पूजन करके शीश झुकाते हैं। लेकिन ये ही संत जब हयात थे तो इनको कितने जुल्म सहने पड़े !

श्री ज्ञानेश्वरजी, उनके बड़े भाई श्री निवृत्तिनाथजी, छोटे भाई श्री सोपानदेवजी और एक छोटी बहन मुक्ताबाई सभी ज्ञानी विभूतियाँ थीं पर इन्हें निंदकों द्वारा बहुत सताया गया, खूब निंदा की गयी और तरह-तरह से कष्ट दिये गये। किसी भी धार्मिक कार्यक्रम में प्रवेश नहीं, किसीके घर में भी प्रवेश नहीं। इनका यज्ञोपवीत संस्कार करने से मना कर दिया गया। इन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। यह उस समय का सबसे बड़ा असहनीय दंड था। ज्ञानेश्वरजी के पिताजी को कोई विषय-लम्पट कहता तो कोई उनकी माँ को भला-बुरा कहता। इस तरह जितने मुँह उतनी बातें होती थीं।

इनके माता-पिता को इतना परेशान किया गया कि कहीं इन्हें भिक्षा तक नहीं मिलती थी। अगर कोई इनको दयावश भिक्षा दे भी देता तो निंदक कहते : ''क्यों दी उसे भिक्षा ? खबरदार जो इनको किसीने कुछ दिया तो !'' कभी दो-दो, तीन-तीन दिन तक भूखे रहना पड़ता था। कभी तृण और पत्ते अथवा फल-फूल खाकर तो कभी केवल जल पीकर ही रहना पड़ता। कभी-कभी वायुभक्षण करके रह जाते और कभी करतल-भिक्षान्न (हथेली पर समाये उतना अन्न) पर ही वे निर्वाह करते थे। इन पर ये जुल्म एक-दो वर्ष नहीं, २२ वर्ष तक किये गये। ये कष्ट इनके मासूम बच्चों को भी कई वर्षों तक सहने पड़े।

अनेक असहनीय कष्टों और मानसिक प्रताड़नाओं के कारण तथा उनके बच्चों को आजीवन समाज से बहिष्कृत न रहना पड़े इसलिए ज्ञानेश्वरजी के माता-पिता को प्रयाग में जाकर अपना शरीर त्याग देना पड़ा। उस समय निवृत्तिनाथजी मात्र दस वर्ष के थे एवं दूसरे भाई-बहन और भी छोटे थे।

एक बार दिवाली के समय निवृत्तिनाथजी ने मुक्ताबाई से कहा : ''आज मांडे (एक तरह का पक्वान्न जो खप्पर पर पकाया जाता है) खाने की इच्छा है।'' घर में मांडे बनाने हेतु मिट्टी का खप्पर नहीं था। मुक्ताबाई खप्पर लेने कुम्हार के पास गयीं तो विसोबा चाटी, जो बड़ा संतद्वेषी था, उसने कुम्हारों से कहा : ''कोई भी इसे बर्तन नहीं देगा।'' हद हो गयी जुल्म की ! जिन संत ज्ञानेश्वरजी के चलाये गये भक्ति पंथरूपी कल्पवृक्ष की छाया में बैठकर आज लाखों जीव त्रिताप से मुक्त हो रहे हैं, उनको भोजन बनाने के लिए पूरे गाँव में किसीने मिट्टी का बर्तन तक नहीं दिया। संतों ने अपना पूरा जीवन समाजोत्थान में, लोक-कल्याण में, ज्ञान बाँटने में लगा दिया पर बदले में समाज ने उनको क्या दिया ? प्रताड़नाएँ, निंदा, तिरस्कार, कटाक्ष भरे तीखे व्यंगबाण... !

संत इतने सहनशील व समता के धनी होते हैं कि सब कुछ हँसते-हँसते सह लेते हैं, कभी किसीका बुरा न चाहते हैं, न करते हैं। सहनशीलता में संतों की तुलना धरती से भी नहीं कर सकते क्योंकि धरती में तो कभी भूकम्प आ जाता है और अपार जन-हानि हो जाती है पर संत कभी किसीका अहित नहीं करते। धन्य हैं वे जो ऐसे ज्ञानी संतों के जीवनकाल में ही उनकी कद्र करते हैं और उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर अपना और समाज का मंगल कर लेते हैं।

नारदजी के गुणों को धारण करने की इच्छा देती है जीवन जीने की सही शिक्षा - पूज्य बापूजी

सच्चरित्रवान व निरभिमानी, ऐसे हैं वे महाज्ञानी

देवर्षि नारदजी चिरंजीवी हैं । कभी-कभी मौज आये तो संतों से मिलने हेतु किसी भी रूप में पधार जाते हैं और फिर असली रूप भी दिखा देते हैं । गोरखपुर में यह लीला उन्होंने की थी और जिस चबूतरे पर वे प्रकट हुए थे वह चबूतरा भी मैं देख के आया ।

भगवान श्रीकृष्ण उग्रसेन को नारदजी का चरित्र बताते हैं : ''नारदजी विद्वान तो हैं, साथ ही सच्चरित्रवान भी हैं । विद्वान होने पर भी सच्चरित्रवान होना बहुत ऊँची बात है । विद्वत्ता व सच्चरित्रता हो और अभिमान न हो - ऐसा मिलना मुश्किल है लेकिन नारदजी में यह सद्‌गुण भी दिखता है - विद्वान, सच्चरित्रवान और निरभिमानी ।

नारदजी में असंतोष, क्रोध व चपलता नहीं है । और किसी भी परिस्थिति से या किसी भी देव-दानव से वे भयभीत हों ऐसी कमजोरी देवर्षि नारदजी में नहीं है । वे जानते हैं कि जिसको सभी देवता और भगवान मिलकर भी मिटाना चाहें तो मिट नहीं सकता वह 'ॐ'स्वरूप आत्मा मैं ही हूँ । उनको तत्त्वज्ञान है और उस तत्त्वज्ञान के कारण वे अपने-आपको अनंत ब्रह्मांडों में व्यापा हुआ मानते-जानते हैं इसलिए उनको अपने सुख के लिए कोई कामना ही नहीं होती ।''

यदि कोई पृथ्वी का सम्राट हो, स्वर्ग उसके अधीन हो और लोक-लोकांतर का आधिपत्य हो परंतु कामनावान है तो तुच्छ है । लेकिन

तीन टूक कौपीन की, भाजी बिना लूण ।
तुलसी हृदय रघुवीर बसे तो इन्द्र बापड़ो कूण ।।

ऐसी स्थिति में भी निष्काम हैं तो इन्द्र भी उनके आगे कोई मायना नहीं रखता है । निष्काम होना यह बड़ी ऊँची उपलब्धि है और देवर्षि नारद वह पा चुके हैं । जितना भी अपना भला हो सकता था, जितनी भी ऊँचाइयाँ हो सकती थीं उन सब का सार 'आत्मसाक्षात्कार' कर लिया है नारदजी ने, इसलिए नारदजी निर्वासनिक पुरुष हैं ।

क्षमाशील और सत्यवादी
जिनके संयम की महिमा कही न जाती

भगवान श्रीकृष्ण उग्रसेन से कहते हैं : ''राजन् ! क्षमाशीलता का गुण तो नारदजी का ऐसे खिला है जैसे कमल खिलता है और वे शक्तिमान भी हैं । नारदजी जहाँ चाहें वहाँ संकल्प करके प्रकट हो जाते हैं । नारदजी में जितेन्द्रियता है । आँख उनको किसी रूप पर फिदा कर दे, जीभ किसी स्वाद पर आकर्षित कर दे, नासिका किसी गंध की गुलाम बना दे, कान उनको खुशामद की ओर ले जायें - ये दोष नारदजी में ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलते । कहाँ तो दासीपुत्र थे और कहाँ ऋषि-मुनि भी उनका आदर करते हैं ! जब भी नारदजी आते हैं न, तो मैं उठ के खड़ा हो जाता हूँ । नारदजी सत्यवादी हैं । सत्य सब धर्मों में श्रेष्ठ है, सब तीर्थों में श्रेष्ठ है ।'' (क्रमशः)

आखिर कौन हैं ये ?

- डॉ. प्रतिभा शर्मा

एम.ए., एम.फिल., एम.बी.ए., पीएच.डी.

(एक अद्‌भुत सत्य घटना पर आधारित पुस्तक 'आखिर कौन हैं ये ?' भाग-१ से संक्षिप्त)

एक मुद्दे की सच्चाई जानने की इच्छा हुई जो पिछले ८ महीने से देश-विदेश के मीडिया में छाया हुआ है - 'नाबालिग के यौन-शोषण के आरोप में विश्व के प्रसिद्ध नामी संत आशाराम बापू जेल में ।' सिर्फ बापू ही नहीं, कई तरह के आरोप विगत कई वर्षों से देश के जाने-माने संतों पर लगते रहे हैं और उन्हें जेल भी जाना पड़ा है । लेकिन आज तक किसी भी संत पर कोई भी आरोप सिद्ध नहीं हुआ है बल्कि वे निर्दोष छूटकर बाहर आये हैं । आज फिर एक संत पर आरोप लगे हैं और वे जेल में हैं । विचारणीय पक्ष यह है कि इन संत पर लगे आरोप का आधार क्या है ? क्योंकि नये कानून बनने के बाद कइयों पर झूठे आरोप लगने लगे हैं और उसमें कई तो झूठे साबित भी हुए हैं । क्या ये संत भी अन्य संतों की तरह निर्दोष छूटकर बाहर आयेंगे ? अगर ऐसा होता है तो फिर मीडिया जो दिखा रहा है वह झूठ है ? अगर संत आशाराम बापू पर लगे आरोप सही हैं तो फिर उन करोड़ों भक्तों (जिसमें महिलाएँ तथा लड़कियाँ भी शामिल हैं) की श्रद्धा का रहस्य क्या है ? उनके ४२५ आश्रमों व उनमें रह रहे हजारों साधकों तथा १७ हजार से ज्यादा चल रहे 'बाल संस्कार केन्द्रों' आदि की वजह क्या है ? ये सारे प्रश्न मेरे जेहन में लगातार घूम रहे हैं और इन्हीं प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ने के लिए मैंने जोधपुर जाने का निर्णय किया ।

सत्य की खोज में जोधपुर की ओर...

जब मैं जोधपुर के उस केन्द्रीय कारागृह के मुख्य द्वार पर पहुँची, जहाँ बापू कई महीनों से हैं, तो वहाँ खड़े लोगों ने बताया : ''आज रविवार है, कैदियों से मुलाकात का दिन है ।''

अभी वहाँ करीब ३०-४० लोग ही खड़े थे परंतु कुछ ही समय में लोगों के आने का सिलसिला चालू हुआ तो अच्छी-खासी भीड़ जेल के सामने हो गयी, जिसमें सभी आयुवर्ग की महिलाएँ, पुरुष एवं बच्चे थे । उसमें भी महिलाओं की संख्या ज्यादा थी ।

मैंने जेल के मुख्य द्वार पर खड़े पुलिसवालों को अपना परिचय देते हुए कुछ जानकारी माँगी : ''यहाँ पर आशाराम बापू के अलावा और कितने कैदी हैं ? आज इतनी भीड़ क्यों हो रही है ?''

सिपाही : ''लगभग ७०० कैदियों की जेल है, आज कैदियों से मुलाकात का दिन है । ये बाबा के दर्शन की भीड़ है ।''

''क्या ये सब लोग आशाराम बापू के ही भक्त हैं या और अन्य लोग भी हैं ?''

इस पर सिपाही ने थोड़ा चिढ़ते हुए कहा : ''अरे ! क्या बतायें, हम तो परेशान हो गये हैं । पहले यहाँ इतनी सख्त ड्यूटी नहीं करनी पड़ती थी । अभी तो २४ घंटे चौकन्ना रहना पड़ता है । पर मानना पड़ेगा इन लोगों को, इतने महीने हो गये बाबा को यहाँ आये, पर एक दिन भी ऐसा नहीं गया जब उनके दर्शन करनेवालों की भीड़ नहीं आयी हो । समझ में नहीं आता, इतने आरोप लगने के बाद भी इन लोगों की श्रद्धा क्यों टिकी हुई है ! कभी-कभी ऐसा लगता है कि बाबा में कुछ तो है ।''

सिपाही की बात सुनकर मेरा माथा ठनका, मैंने कई बार सुना था कि 'सबसे ज्यादा भीड़ अगर किसीके सत्संग में होती है तो वे संत आशाराम बापू ही हैं ।' इतने बड़े संत को इस तरह के आरोप में जेल की सजा काटनी पड़ रही है !

यही सब सोचते हुए मैं जेल के मुख्य द्वार के बाहर एक पत्थर पर बैठ गयी । इतने में मेरे नजदीक बैठी एक लड़की के पास एक पुलिस ऑफिसर आकर बोला : ''आप कहाँ से आये हो ?''

उसने बताया कि ''मैं महाराष्ट्र से आयी हूँ ।''

''आप इतनी दूर से क्यों आये हो ?''

''आशारामजी बापू के दर्शन करने ।'' (यह बोलकर वह लड़की फिर से शांत होकर बैठ गयी ।)

''क्या आपको सच में लगता है कि आपके बापू निर्दोष हैं ?''

''मेरे बापू निर्दोष थे, हैं और रहेंगे ।'' उस लड़की का इतना तेज उत्तर पाकर वह ऑफिसर उस लड़की के थोड़ा पास आया और बोला : ''बहन ! हम भी जानते हैं कि बापू एकदम निर्दोष हैं । और सच में वे कोई साधारण पुरुष नहीं एक दिव्य पुरुष हैं ।''

लड़की ने पलटकर पूछा : ''आप यह कैसे कह सकते हैं ?''

तब उस पुलिसवाले ने बताया : ''बापूजी की सुरक्षा में कई ऑफिसर रहते हैं । एक बार मेरा भी नम्बर लगा । मेरी ड्यूटी बाबाजी को चेक करने की थी । मैं बाबाजी के शरीर को छूकर चेक कर रहा था तो बाबाजी ने कहा कि ''बाहर से क्या चेक कर रहे हो ? भीतर चेक करो कि तुम कौन हो ?'' यह सुनते ही मुझे कुछ अजीब-सा अनुभव हुआ । बस, बहनजी ! तब से हमें तो पक्का हो गया कि बाबाजी बिल्कुल निर्दोष हैं और ये कोई महापुरुष हैं ।''

उसने इतना तक कह दिया कि ''बापूजी के आने के बाद हम उनके अहमदाबाद आश्रम में जरूर जायेंगे और मंत्रदीक्षा भी लेंगे ।''

ऑफिसर के मुँह से ऐसी बातें सुनकर मैं तो अवाक् रह गयी । फिर तो मेरी जिज्ञासा और बढ़ गयी और मैं सबके साथ आकर भीड़ में शामिल हो गयी ।

अगाध श्रद्धा

कुछ महिलाओं से मैंने पूछा : ''आप बापू के दर्शन के लिए आयी हो ?''

उन्होंने मुझे सिर से पैर तक देखा, कोई जवाब नहीं दिया, दूसरी ओर चली गयीं। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। इसी बीच एक ३०-३२ साल का युवक मेरे पास आया और बोला : ''वे आपको पत्रकार समझ रही हैं, इसलिए आपकी बात का उन्होंने जवाब नहीं दिया।''

मैंने कहा : ''भाई, अगर मैं पत्रकार हूँ तो भी क्या मेरी बात का जवाब नहीं देना चाहिए ?''

युवक : ''दरअसल, पिछले कई महीनों से मीडिया ने बापूजी और आश्रमों पर कई घिनौने आरोप लगाये हैं, जो एकदम झूठे और बेबुनियाद हैं। मीडिया ने पक्षपातपूर्ण तरीके से खबरों को तोड़-मरोड़कर दिखाया है, जिससे साधकों में मीडिया के खिलाफ बहुत आक्रोश है। आपको मालूम है कि भोलानंद, जिसने अनर्गल आरोप लगाया था कि ''जम्मू आश्रम में बच्चे गाड़े गये हैं...'', उसका भांडाफोड़ हो गया है और उसने पुलिस हिरासत में तथा जाहिर में आकर सभी षड्यंत्रकारियों एवं बिकाऊ मीडियावालों की पोल खोल दी है। क्या आपको जानकारी है ?''

मैंने कहा : ''नहीं।''

फिर वह युवक आत्मविश्वास से बोला : ''होगी भी कैसे ? मीडिया ने तो यह खबर लोगों तक आने ही नहीं दी। बापूजी के केस में मीडिया के इसी रुख के कारण लोगों का मीडिया पर से विश्वास उठ गया है।''

''आपका नाम क्या है ? और कहाँ से हो ? क्या करते हो ?''

''मेरा नाम अंकित दवे है, मुंबई से हूँ। अभी तो नौकरी छोड़ दी है।''

''नौकरी क्यों छोड़ दी ?''

''जब तक बापूजी बाहर नहीं आ जाते मुंबई नहीं जाऊँगा।''

मैं सुनकर हैरान रह गयी। आज के इस भौतिकवादी समाज में पढ़ा-लिखा, फर्राटेदार अंग्रेजी बोलनेवाला नवयुवक अंधविश्वासी तो नहीं हो सकता !

हमारी बातें पास में खड़ी एक २०-२२ साल की लड़की सुन रही थी।

मैंने उससे पूछा : ''आप कहाँ से हो ? यहाँ कब से आयी हो ?''

लड़की : ''जम्मू से हूँ। मैं तो २०-२५ दिन से ही हूँ यहाँ।''

बातों-ही-बातों में उसने बताया कि जिस दिन से बापू जेल गये हैं, उसने भोजन छोड़ दिया है, केवल दूध और फल लेती है।

मैंने पूछा : ''भोजन कब करोगी ?''

''जब बापूजी बाहर आयेंगे।'' (इतना कहते ही उसकी आँखों में आँसू आ गये।)

मैंने उसे सांत्वना दी और दूसरी ओर रुख किया। यहाँ पर उपस्थित लोगों की अगाध श्रद्धा देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था और हृदय में कुछ अजीब-सी अनुभूति भी। सभीके चेहरे और बातों में एक सच्चाई थी।

आखिर कौन हैं ये ?
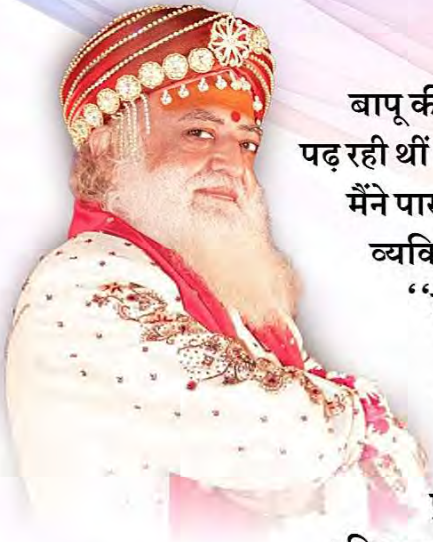
बापू की एक झलक पाने के लिए बेताब इस भीड़ में कुछ महिलाएँ एक छोटी-सी किताब पढ़ रही थीं।

मैंने पास खड़े एक व्यक्ति से पूछा : ''ये महिलाएँ क्या पढ़ रही हैं ?''

व्यक्ति बोला : ''श्री आशारामायणजी का पाठ कर रही हैं।''

''इसमें क्या है ?''

''जैसे भगवान श्रीराम की जीवनलीला रामायण है, वैसे ही पूज्य बापूजी की जीवनलीला श्री आशारामायण है।''

कौतूहलवश मैंने भी वह पुस्तिका ले ली । काव्य के रूप में लिखी इस पुस्तिका में आशाराम बापू का जीवन-परिचय और उनके द्वारा की गयी लीलाओं की झलक थी।

बापू के जन्म के बारे में लिखा था : 'इनके जन्मते ही अजनबी सौदागर बड़ा झूला ले आया था। आशाराम बापू के बचपन का नाम आसुमल था। इन्हें बचपन से ही ईश्वरप्राप्ति की लगन थी। विद्यालय में शिक्षक भी उनका आदर करते थे। जब ये बड़े हुए और घरवालों ने उनकी शादी करनी चाही तो घर छोड़कर भाग गये। माँ व भाई ने ढूँढ़कर समाज में अपनी इज्जत का वास्ता देकर शादी करवायी। लेकिन वे धर्मपत्नी को समझा-बुझाकर अपना लक्ष्य ईश्वरप्राप्ति बता के घर छोड़कर चले गये। फिर वे कई गुफाओं, कंदराओं, जंगलों तथा अन्य जगहों में सद्गुरु की खोज में घूमते-घामते एक ब्रह्मज्ञानी संत साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के चरणों में पहुँचे।'

इतना पढ़कर मन में फिर ठनक हुई कि जिनका जीवन युवावस्था से इतना संयमी व वैराग्यपूर्ण है कि ईश्वरप्राप्ति के लिए शादी के तुरंत बाद ही अपनी पत्नी को छोड़कर चले जाते हैं, क्या वे ७४-७५ वर्ष की आयु में अपनी पोती की उम्र की लड़की के साथ ऐसा व्यवहार कर सकते हैं ! एक बार तो ऐसा सोचना भी मुझे पाप लग रहा था। खैर, जैसे-तैसे मन को इस उधेड़-बुन से सँभालते हुए मैंने आगे की पंक्तियाँ पढ़ीं।

'ईश्वरप्राप्ति की तीव्र तड़प देखकर साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज ने उनको शिष्यरूप में स्वीकार लिया। आसुमल गुरुसेवा में तितिक्षा सहते हुए बड़ी तत्परता से लगे रहे। और आसोज सुद दो दिवस संवत् बीस-इक्कीस को साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज की कृपा से उन्हें आत्मसाक्षात्कार हुआ।

इसके बाद उनके जीवन में कई चमत्कार हुए। सत्संग व भगवन्नाम के प्रताप से उन्होंने कितने ही लोगों के रोग-शोक मिटाये, शराब-मांस आदि छुड़वाये और लोगों को भक्ति-ज्ञान का रंग लगाया... आदि।'

यह पुस्तिका पढ़कर मेरा मन आश्चर्य और असमंजसता के सागर में गोते खाने लगा कि आखिर कौन हैं ये ?

फिर सोचा, 'चलो, कुछ और लोगों से मिला जाय।'
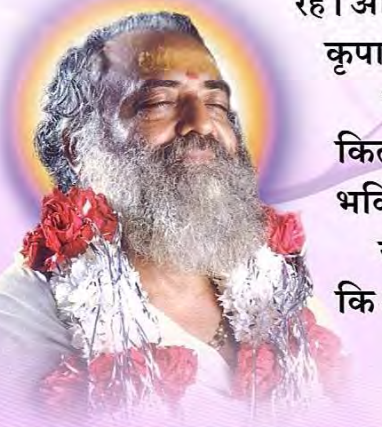
मेरी उत्सुकता बढ़ती गयी...

एक लम्बी-सी सुंदर युवती पर मेरी निगाहें ठहर गयीं। मैंने उससे पूछा : ''आप कहाँ से आयी हो ?''

उसने सहज भाव से उत्तर दिया : ''अमेरिका से।'' अब चौंकने की बारी मेरी थी; अमेरिका से... !

''क्यों आयी हो ?''

युवती : ''बापूजी के दर्शन करने।''

''आप तो बहुत दूर से आयी हो, दर्शन हो गये क्या ?''

''हाँ, कल कोर्ट में तो हुए थे पर बहुत दूर से हुए थे। आज रविवार को जेल के अंदर जाने की अनुमति मिल सकती है, जिससे पास से दर्शन हो सकते हैं।''

''अगर आप अन्यथा न लें तो एक प्रश्न पूछूँ ?''

''हाँ-हाँ, पूछिये।''

''देखो, इतने महीनों से दुनिया के सामने बापूजी के खिलाफ माहौल बना है, कई आरोप लगे फिर भी आपकी इतनी श्रद्धा कि अमेरिका से यहाँ दर्शन के लिए आयी हो, मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। ऐसा क्यों ?''

''मैंने तो समझा था कि आपने मंत्रदीक्षा ली हुई है लेकिन आपके इस प्रश्न से मुझे समझ में आ गया कि आपने दीक्षा नहीं ली है। कोई बात नहीं, मैं आपके प्रश्न का जवाब जरूर देना चाहूँगी।'' (यह सारा वार्तालाप अंग्रेजी में चल रहा था।)

लेकिन ये हकीकत है

उस युवती ने बताया कि ''मेरा नाम सुची है, मैंने व मेरे पति ने १९९८ में बापूजी से दीक्षा ली थी। हमारा एक बेटा है। जब वह छोटा था तो एक बार ऐसा बीमार पड़ा कि किसी दवाई के रिएक्शन से उसे दोनों आँखों से दिखना बंद हो गया। कई डॉक्टरों से इलाज कराया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। एक दिन मैंने बेटे को बापूजी के फोटो के सामने लिटा दिया और एक चिट्ठी लिखकर बापूजी द्वारा स्पर्श की हुई चरणपादुका पर रख दी, फिर रातभर हम वहीं बैठे रहे। अचानक सुबह-सुबह, लगभग ४ बजे मेरा बेटा उठा और हमें देखते हुए बोला : ''पीले कपड़े में बापूजी आये थे, बापूजी की आँखों से रोशनी निकली और मेरी आँखों में समा गयी, मुझे अब सब दिख रहा है।''

हम तो खुशी से झूम उठे। जहाँ सभी डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था वहाँ बापू ने हमारे बच्चे को नेत्रदान दिया। मुझे लगता है, शायद आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं होगा लेकिन यह हकीकत है। तब से लेकर आज तक मैं और मेरे पति साल में २ बार बापूजी के दर्शन करने भारत आते हैं। यहाँ जो भी लोग खड़े हैं या फिर बापू के जितने भी साधक हैं उनके अपने कई अनुभव हैं इसीलिए सबकी बापूजी में अगाध श्रद्धा है।

जैसा आपने कहा कि मीडिया में इतने दिनों से कई तरह की बातें प्रसारित की जा रही हैं, फिर भी हमारी श्रद्धा में कोई कमी नहीं आयी है तो इसका कारण यही है कि जो बापूजी ने हमें दिया है, उस पर मीडिया का कोई असर नहीं हो सकता। हमारे अमूल्य आध्यात्मिक और लौकिक अनुभवों के आगे मीडिया की वाहियात बातों की कोई कीमत ही नहीं है। जिनकी प्रेरणा से युवा पीढ़ी संयमी हो रही है, घर-घर 'वेलेंटाइन डे' की जगह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया जा रहा है, आप जरा सोचिये ! क्या ऐसे महान संत ऐसा घृणित कार्य कर सकते हैं ? ऐसा सोचना भी पाप है।''

उस युवती की बातें सुनकर मैं अवाक् रह गयी।

अनोखी गुरुदक्षिणा

अब मेरी नजर उस व्यक्ति पर गयी जो लगातार मुझे ही घूर रहा था। वह व्यक्ति अब मेरे नजदीक आकर बोला : ''पहचाना ?''

''अरे संजय !''

मेरी बहन और संजय ने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से साथ-साथ पीएच.डी. की थी।

मैंने पूछा : ''क्या कर रहे हो आजकल और यहाँ कैसे ?''

संजय : ''मैं इंदौर साइंस कॉलेज में प्रोफेसर हूँ और यहाँ बापूजी के दर्शन के लिए आया हूँ।''

''संजय ! मुझे यह जानकर बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि तुम भी बापू के दर्शन करने आये हो ! मैं लेखिका हूँ। बहुत दिनों से मीडिया में बापू के बारे में खबरें सुन-सुनकर अनायास ही इच्छा हुई कि मैं भी इनके बारे में कुछ लिखूँ लेकिन मैं सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करती हूँ। मीडिया द्वारा इतने कुप्रचार के बाद भी एक बात बार-बार सामने आ रही थी कि आशाराम बापू के भक्तों ने कभी अनशन किया तो कभी रैलियाँ निकालीं, कहीं जेल भरो आंदोलन किया और कइयों ने तो भोजन का ही त्याग कर दिया।

बस, यही जानने के लिए कि आखिर सत्य क्या है ? आखिर कौन हैं ये ? ऐसी कौन-सी सच्चाई है जो लोगों तक नहीं पहुँची है... यही सब जानने के लिए मैं यहाँ आयी हूँ।

अच्छा, तुम तो वैज्ञानिक हो और विज्ञान पढ़े लोग आसानी से किसी बाबा के चक्कर में नहीं आते, तुम कैसे फँस गये ?''

''प्रतिभा ! तुम इस तरह की बात करोगी तो मैं तुम्हारे किसी भी प्रश्न का जवाब नहीं दूँगा।''

''माफ करना संजय ! मेरा मतलब तुम्हें चोट पहुँचाना नहीं था, मैंने मजाक में ऐसा कह दिया। अगर तुम्हें बुरा लगा हो तो मैं अपने शब्द वापस लेती हूँ।''

''बापूजी मेरे गुरु हैं और मेरे पूरे परिवार ने उनसे मंत्रदीक्षा ली है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं ड्रग्स लेता था और ड्रग्स का इतना आदी हो गया था कि मैंने कॉलेज जाना भी छोड़ दिया था। मेरी माँ बहुत परेशान हो गयी थी, पिताजी थे नहीं। माँ ने बापूजी से दीक्षा ली हुई थी और एक दिन मुझे बापूजी के दर्शन के लिए बहुत आग्रह करके ले गयी। बापूजी सत्संग में कह रहे थे कि ''मुझे दक्षिणा में अपनी बुराइयाँ दे दो।''

मेरी माँ ने मेरा हाथ पकड़कर ऊपर कर दिया और कहा कि ''बोल, मेरी नशे की आदत ले लो।'' मैंने मजाक में कह दिया : ''मेरी नशे की आदत ले लो।'' तुम्हें विश्वास नहीं होगा उस दिन के बाद से आज तक मैंने कभी ड्रग्स नहीं लीं और बाद में मैंने बापूजी से दीक्षा भी ले ली। मैं आज जो कुछ भी हूँ, बापूजी की वजह से हूँ।''

एक पढ़ा-लिखा कॉलेज का प्रोफेसर, वैज्ञानिक किसीके बहकावे में नहीं आ सकता फिर भी मुझे अपने कई प्रश्नों के जवाब चाहिए थे इसलिए मैंने पूछा : ''संजय ! मैं तुम्हारी बात समझ रही हूँ लेकिन मेरे कुछ प्रश्न हैं, क्या तुम उनका जवाब देना पसंद करोगे ?''

इतना दुष्प्रचार ! कुछ तो कारण होगा...

'हाँ हैं, इसके एक नहीं बहुत सारे कारण हैं । आशारामजी बापू एक विख्यात आध्यात्मिक संत हैं, जिन्होंने करोड़ों लोगों के मन पर भारतीय संस्कृति के संस्कार डाले हैं, भटके हुए लोगों को सत्य और ईश्वर के मार्ग पर लगाया है । पूज्य बापूजी ने धर्मांतरण का शिकार हो रहे हिन्दुओं को जागृत किया है । यह सब संस्कृति-विरोधी टीवी चैनलों और हिन्दू-विरोधी शासकों को मान्य नहीं था । बापूजी का प्रवचन सुनकर बहुत सारे हिन्दू, जिन्हें प्रलोभन देकर या डरा-धमकाकर धर्मांतरण के लिए विवश किया जा रहा था, वे धर्म के प्रति जागरूक होने लगे थे, परिणाम यह आया कि धर्मांतरण करानेवाली संस्थाओं के मंसूबों पर पानी फिर गया, जिससे ये संस्थाएँ बापूजी के विरुद्ध हो गयीं ।

बापूजी के सत्संगी मांसाहार, शराब, फास्टफूड व कोल्डड्रिंक्स जैसी शरीर को हानि पहुँचानेवाली चीजों का त्याग कर देते हैं । इससे कई विदेशी कम्पनियों को नुकसान होने लगा और ये बापूजी की लोकप्रियता खत्म करना चाहती थीं । सौंदर्य-प्रसाधन बनानेवाली बहुत सारी विदेशी कम्पनियों के लिए भारत देश एक बहुत बड़ा बाजार है । लेकिन बापूजी अपने सत्संगों में अनेक बार इन केमिकल प्रसाधनों के नुकसानों के बारे में सचेत कर अनेक देशी और आयुर्वेदिक नुस्खे बताते हैं । इससे इन कम्पनियों को तथा इन कम्पनियों के विज्ञापन से करोड़ों रुपये कमानेवाले मीडिया को भी नुकसान होता है । इसलिए ये भी बापू का विरोध करते हैं ।

बापूजी ने युवाओं को व्यसनमुक्त कर उन्हें संयम व सादगी का मार्ग दिखाया है । बापूजी से दीक्षा ले के 'विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों' में भाग लेने से भारत की बाल एवं युवा पीढ़ी बहुत संयमी, तेजस्वी, निडर और बुद्धिमान हो रही है । बापूजी के द्वारा पूरे विश्व में बच्चों में नैतिक शिक्षा के लिए १७,००० से अधिक 'बाल संस्कार केन्द्र' चलवाये जा रहे हैं, ताकि उनमें हमारी संस्कृति के मूल्यों का संवर्धन हो । भारतीय युवावर्ग को बापूजी बार-बार 'भारत को विश्वगुरु बनाने' का नारा देकर उत्साहित कर रहे हैं । इसलिए भारत देश की विरोधी शक्तियाँ बापूजी को अपना दुश्मन मानती हैं...''

हैं जवाब आपके पास ?

संजय लगातार बोलता जा रहा था । उसका चेहरा लाल हो गया था, उसके चेहरे पर दुःख और क्रोध का मिला-जुला भाव स्पष्ट दिख रहा था ।

''प्रतिभा ! मैं यही कहना चाहता हूँ कि मीडिया दोनों पक्ष को क्यों नहीं दिखाता है ? आज आठ महीने से लगातार बापू के खिलाफ मीडिया ने मोर्चा सँभाला हुआ है इसलिए मैं तुमसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ ।

☛ एक लड़की जो उत्तर प्रदेश की रहनेवाली है, छिंदवाड़ा (म.प्र.) में पढ़ रही थी, तथाकथित घटना बताती है जोधपुर की और एफआईआर पाँच दिन बाद दिल्ली जा के रात को २.३० बजे लिखवाती है, ऐसा क्यों ? इसे मीडिया ने क्यों नहीं दिखाया ?

☛ लड़की की मेडिकल रिपोर्ट में रेप या यौन-शोषण की पुष्टि नहीं हुई फिर चैनलों ने झूठी अफवाहें क्यों फैलायीं कि बलात्कार हुआ है ?

☛ साधक शिवाभाई के पास से अश्लील सीडी बरामद होने का झूठा प्रचार क्यों किया गया ?

☛ अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला, राहुल सचान, अजय, हरेन्द्र, राजू लम्बू आदि कौन हैं ? इनके चरित्र और अतीत के बारे में जनता को क्यों नहीं बताया जा रहा है। अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला, राहुल सचान के ऊपर तो पहले से ही केस चल रहे हैं तो ऐसे चरित्रभ्रष्ट लोगों द्वारा लगाये गये आरोपों को सच बताकर मीडिया उनका समर्थन क्यों कर रहा है ?

☛ जिस भोलानंद के झूठे आरोपों को मीडिया सारे दिन दिखाता था, वही भोलानंद जब स्वीकार करता है कि उसे बापूजी पर झूठे आरोप लगाने के लिए षड्यंत्रकारियों व कुछ मीडिया चैनलों द्वारा मालामाल करने का लालच दिया गया था तो इस खुलासे को मीडिया ने क्यों नहीं दिखाया ?''

मैं असमंजसता में खड़ी सुन रही थी, मेरे पास कोई जवाब नहीं था लेकिन संजय मेरे जवाब का इंतजार नहीं कर रहा था, उसके सवाल खत्म ही नहीं हो रहे थे।

वह फिर बोलने लगा :

☛ ''वेलेंटाइन डे को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में बदलकर क्या बापूजी ने कोई अपराध किया है ?

☛ होली, दिवाली आदि हिन्दू त्यौहारों को वैदिक रीति से मनाने का कार्य क्या गलत है ?

☛ संत श्री आशारामजी के आश्रम में हजारों गायों को कटने से बचाकर उनको पाला जाता है, गरीबों के लिए भंडारा किया जाता है, 'भजन करो, भोजन करो, रोजी पाओ' कार्यक्रम चलवाकर लाखों गरीबों का कल्याण किया जाता है। क्या किसीको जीवनदान देना गुनाह है ?

☛ गर्मियों में शरबत, छाछ व टोपी वितरण तथा सर्दियों में जरूरतमंदों में खजूर, कम्बल और ऊनी वस्त्रों, गर्म भोजन के डिब्बों का वितरण करना क्या पाप है ?

☛ देश में जब-जब बाढ़, भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदाएँ आयीं तो हजारों बेघर लोगों के लिए बापूजी ने मकान बनवाये, कपड़े, बर्तन आदि की व्यवस्था की। जहाँ प्रशासन नहीं पहुँचा वहाँ बापूजी द्वारा हजारों गरीब लोगों की सेवा करवायी गयी। क्या यह गुनाह है ?

☛ पूज्य बापूजी के सत्संग से मेरे जैसे असंख्य लोग जो व्यसनों में डूबकर तबाह हो चुके थे, उनके जीवन से ड्रग्स, शराब, तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी आदि सदा के लिए अलविदा हो गये और वे कुत्ते की मौत मरने से बच गये। क्या यह उनकी गलती है ?

☛ अगर मीडिया इतना ही देश का भला चाहता है और सच दिखाता है तो उनके सेवाकार्यों को मीडिया ने आज तक कभी क्यों नहीं दिखाया ?

☛ इस बारे में कभी कोई रिपोर्ट क्यों नहीं बनायी जाती है कि संत आशारामजी बापू की महिला शिष्यों की संख्या करोड़ों में है ? उनका अनुभव क्यों नहीं दिखाया जाता है ?

☛ पूरे भारत में बापूजी ने 'युवाधन सुरक्षा अभियान' चलाकर स्कूलों और कॉलेजों के विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य और संयम का महत्त्व सिखाया, संयम पर आधारित 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक करोड़ों की संख्या में देश-विदेश में बाँटी गयी, क्या इस बात का प्रचार नहीं किया जाना चाहिए था ?

इसलिए हम सभी बहुत व्यथित हैं कि बापूजी को बिल्कुल झूठे, मनगढ़ंत आरोपों में फँसाकर जेल में रखा गया है। भारत की संस्कृति को बदनाम करने के लिए देश के प्रमुख संतों को साजिश का शिकार बनाया जा रहा है। बापूजी ने लोगों को सत्संग ही नहीं, कर्मयोग के सुसंस्कारों के साथ एक नयी दिशा, एक नयी पहचान देकर भारत के कदम विश्वगुरु पद की ओर बढ़ाये हैं।

प्रतिभा ! तुम और हम ४-५ व्यक्ति भी जोड़कर रख सकें तो बड़ी बात है, यहाँ तो करोड़ों लोग बापूजी के भक्त हैं और उन करोड़ों लोगों में से एक-एक के अनेकों अनुभव हैं। और इतने वर्षों से बापूजी के सान्निध्य में लोग अपने को उन्नत महसूस करते हैं, आनंदित महसूस करते हैं। लोगों को अब मीडिया या किसीके भी कुछ कहने का कोई असर नहीं हो सकता।

शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी, साध्वी प्रज्ञा सिंह, स्वामी केशवानंदजी, नित्यानंदजी जैसे हिन्दू संतों को बदनाम कर धर्म को नष्ट करने का षड्यंत्र वर्षों से चला आ रहा है, मगर अब परिणाम सबके सामने आ ही गया न ! सारे संत एकदम पाक-साफ साबित हो गये। और आज परम पूज्य बापूजी के साथ फिर से वही इतिहास दोहराया जा रहा है। मगर अफसोस है कि इतने पर भी भारत की जनता की आँखें नहीं खुल रही हैं, वह देशद्रोहियों के प्रति सावधान नहीं हो रही है। धर्मद्रोहियों को इतना जरूर याद रखना चाहिए कि संतों व संस्कृति के विरुद्ध दुष्प्रयत्न करना... स्वयं को बरबाद करना है ! हमारे बापूजी हमारे गुरु हैं, हमारे भगवान हैं और मुझे गर्व है कि मैं संत श्री आशारामजी बापू का शिष्य हूँ।''

मैं संजय का विश्वास देखकर दंग रह गयी। संजय कुछ देर चुप रहा और फिर कुछ सोचकर पुनः बोला : ''प्रतिभा ! मैं तुमसे निवेदन करता हूँ कि तुम अपनी किताब में मेरी ये बातें जरूर लिखना।''

''जरूर, मैंने जो तुमसे प्रश्न किये और उसके मुझे जो उत्तर मिले वे तुम मेरी किताब में जरूर पाओगे।''

नये प्रश्नों का जन्म

मैंने वहाँ उपस्थित लोगों की श्रद्धा-भक्ति को मन-ही-मन नमन किया और वापस अपने गंतव्य की ओर चल पड़ी। ट्रेन में मेरे मन में विचार आया कि जब मैंने यह जेल यात्रा शुरू की तो मैं एक गहरे असमंजस में थी कि आखिर कौन हैं संत आशारामजी बापू ? जैसा मीडिया दिखाता है वैसे या जैसे इनके करोड़ों भक्त इन्हें मानते हैं वैसे अवतारी संत-महापुरुष !

इस यात्रा के बाद मेरे प्रश्नों का जवाब मिल गया परंतु उन जवाबों से कुछ नये प्रश्नों का जन्म हो गया। उन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पढें पुस्तक - 'आखिर कौन हैं ये ?', भाग-२

आवश्यकता है वीर सपूतों की

बाजीराव पेशवा

बात उस समय की है जब हिन्दुओं पर मुगलों का अत्याचार अपनी चरम सीमा पर था और हिन्दू अपने को दीन व लाचार मानकर सब सह रहे थे। औरंगजेब का खौफ महाराष्ट्र के गाँवों में छाया हुआ था। उसके क्रूर सैनिक आकर आतंक मचाते थे, युवतियों को उठाकर ले जाते थे, किसानों की भेड़-बकरियों व गायों को अपना भोजन बना लेते थे, फसलों को तहस-नहस कर देते थे।

एक बार दशहरे के पर्व पर छत्रपति शिवाजी के पौत्र साहूजी महाराज के मंत्री बाजीराव पेशवा, जो वीर, पराक्रमी व बड़े बुद्धिमान भी थे, अपने सैनिकों के साथ खानदेश की मुहिम पर निकले। 'होल' गाँव से गुजर रहे थे कि किसी पेड़ के पीछे से एक मिट्टी का ढेला बड़े जोर से आकर उनके मुँह पर लगा। उनके मुँह से खून आने लगा। इतने में एक बालक गाँव की तरफ भागता दिखायी दिया। बाजीराव ने सैनिकों को आदेश दिया : ''जाओ, उस बालक को शीघ्र पकड़कर ले आओ।'' जब पेशवा के सामने उस बालक को लाया गया तो पीछे-पीछे उसकी विधवा माँ और मामा भी आ गये।

बालक ने आते ही निडरता से व्यंगात्मक प्रश्न किया : ''क्यों, मिट्टी के ढेले से पेट नहीं भरा क्या ?''

बाजीराव उस बालक की निर्भयता देखकर दंग रह गये ! बालक से पूछा : ''तुमने मुझे ढेला क्यों मारा ?''

बालक : ''शुक्र मनाओ कि ढेला ही मारा है। तुम लोग हमें लाचार मानकर हमारी भेड़-बकरियों को मार के खा जाते हो, किसानों की फसलें जला देते हो। लेकिन अब हम नहीं सहेंगे, हम लड़ेंगे और तुम्हें मुँह की खानी पड़ेगी, जैसे अभी खायी है।''

पेशवाजी तनिक भी क्रोधित नहीं हुए बल्कि बालक की निर्भयता व वीरता देखकर बहुत प्रसन्न हुए और बोले : ''बेटा ! मैं तुम्हारी निडरता देख बहुत खुश हुआ लेकिन हम वे नहीं हैं जो तुम समझ रहे हो। मैं तो साहूजी महाराज का मंत्री बाजीराव हूँ। हमारे महाराज तो आप सबके रक्षक हैं।''

वीर सेनापतिमल्हारराव होल्कर

बालक शर्मिंदा होते हुए बोला : ''क्षमा कीजिये। आप ही की तरह वे मुगल सैनिक घोड़े पर सवार होकर आते हैं जिस कारण मैं धोखा खा गया।''

पेशवा ने बालक की माँ और मामा से कहा : ''यह बालक बड़ा निर्भय और होनहार है। इस कोमल उम्र में इतना साहस ! धन्य है इसका अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम ! बचपन में ही वतन के लिए मर-मिटने का अद्भुत भाव है। यह जरूर एक दिन बहादुर सिपहसालार बनकर मराठा साम्राज्य में चार चाँद लगायेगा। अगर आप लोग अनुमति दें तो इसे महाराज की सेवा के लिए ले जाऊँ ?''

माँ और मामा ने गौरवान्वित हो स्वीकृति दे दी। यही बालक आगे चलकर मराठा साम्राज्य का वीर सेनापति 'मल्हारराव होल्कर' के नाम से शौर्य एवं पराक्रम का प्रतीक बनकर चमक उठा। सारे मुगल सरदार इसके नाम से थर-थर काँपते थे।

हमारे देश में मल्हारराव होल्कर, हकीकत राय, गुरु गोविंदसिंह के दो वीर पुत्र, स्कंदगुप्त, छत्रपति वीर शिवाजी - ऐसे अनेक वीर बालक हुए हैं, जिन्होंने अपनी संस्कृति, धर्म व राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राणों तक

की परवाह नहीं की। हर बच्चे में इनके समान साहस, शौर्य व योग्यताएँ छुपी हुई हैं। माँ-बाप को चाहिए कि वे अपने बच्चों में बाल्यकाल में ही ऐसे संस्कारों का सिंचन करें कि उनमें भी अपनी संस्कृति व देश के लिए कुछ कर दिखाने की उमंग जगे। आज की मैकाले शिक्षा-पद्धति, फिल्मों, मीडिया आदि के माध्यम से हमारे देश के नौनिहालों को भ्रमित किया जा रहा है। देश में ऐसा माहौल बनाया जा रहा है कि वे पाश्चात्य जगत के अंधानुकरण के लिए विवश हो जायें और अपनी भारतीय संस्कृति व धर्म के प्रति हीनभावना से ग्रस्त हो जायें। अतः हमें अपने देश की बाल पीढ़ी की ऐसे वातावरण से रक्षा करनी होगी और उन्हें संतों-महापुरुषों के मार्गदर्शन का लाभ दिलाना होगा, जिससे उनका जीवन चमक उठे और वे अपने देश, संस्कृति व माता-पिता को गौरवान्वित कर सकें।

ढूँढ़ो तो जानें

जिन भी संतों ने धर्म-जागृति का कार्य किया है, उनके खिलाफ षड्यंत्र रचे गये व कुप्रचार किया गया। लेकिन इसके बावजूद आज भी वे लाखों-करोड़ों लोगों के दिलों में बसे हैं। ऐसे संतों में से १५ के नाम नीचे दी हुई वर्ग-पहेली से खोजिये।

म	न	ट	न	र	सिं	ह	मे	ह	ता	पू	ज
द	ज	ये	न्द्र	स	र	स्व	ती	जी	बा	म	जी
सं	त	तु	का	रा	म	जी	ते	जी	हा	र्य	के
त	क्षा	ए	क	ना	थ	जी	म	भ	चा	इ	श
ज्ञा	म	प	ब्र	र	द	रा	जी	रा	द	स	वा
ने	म	हो	व	नं	शा	द	क	ऊ	मी	ल	नं
श्व	ह	रं	का	आ	नं	शं	ज्ञो	म	रा	भ	द
र	क	वे	श्री	त्या	द्य	ति	साँ	ई	बा	बा	जी
जी	वि	त	नि	आ	खं	र	म	मा	ई	रा	सु
ख	सं	त	क	बी	र	जी	त्र	क्ष	ग	हे	न
त	च	मी	म	हा	त्मा	बु	द्ध	ती	स	मा	ख
म	स्वा	घ	सं	कृ	पा	लु	जी	म	हा	रा	ज

उत्तर : आद्य शंकराचार्यजी, नरसिंह मेहता, मीराबाई, एकनाथजी, विवेकानंदजी, संत ज्ञानेश्वरजी, संत तुकारामजी, महात्मा बुद्ध, साँई बाबा, संत कबीरजी, संत श्री आशारामजी बापू, नित्यानंदजी, जयेन्द्र सरस्वतीजी, केशवानंदजी, कृपालुजी महाराज

घर में धनात्मक ऊर्जा व सुख-शांति, समृद्धि हेतु सरल प्रयोग

* घर को नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त रखने के लिए पूर्व दिशा में मिट्टी के एक छोटे से पात्र में खड़ा नमक भरकर रखें, नमक गीला होने (नमी आने) पर बदल दें।
* घर के लोग रसोईघर में बैठकर एक साथ भोजन करें, इससे घर के झगड़े मिट जायेंगे और सफलता मिलेगी।
* घर के मुख्यद्वार के सामने कोई भी बाधा (खम्भे, सीढ़ियाँ आदि) नहीं होनी चाहिए।
* किसी भी प्रत्यक्ष दिखायी देती बीम के ठीक नीचे सोने या बैठने से स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है।
* जो घड़ियाँ बंद पड़ी हों, उन्हें चालू करें या तो घर से हटा दें। बंद घड़ियाँ हानिकारक होती हैं।

उपर्युक्त बातों का ध्यान रखा जाय तो आपके जीवन और घर में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा और कई घरेलू समस्याएँ अपने-आप दूर हो जायेंगी।

****

बुराइयों को मिटानेवाला एक दर्पण : ऋषि प्रसाद

- महामंडलेश्वर प्रेमानंदजी महाराज
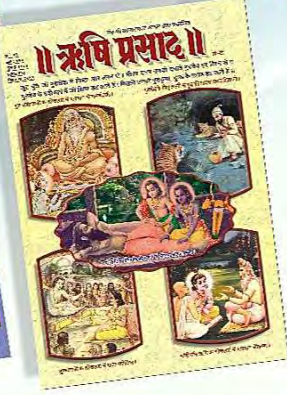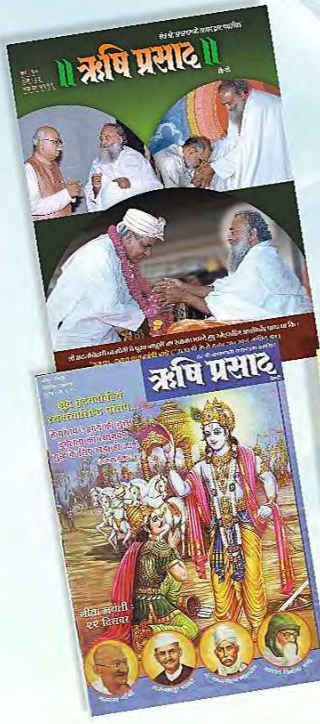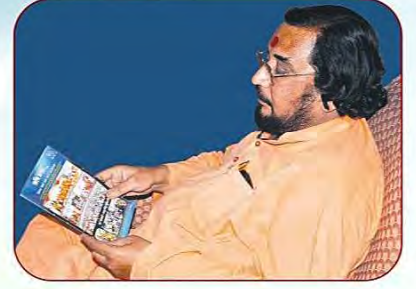
मुझे 'ऋषि प्रसाद' में दी गयीं छोटी-छोटी बातें भी बड़ी अच्छी लगती हैं। 'ऋषि प्रसाद' में जो उदाहरण, कथा, कहानियाँ आदि होती हैं उन्हें हम अपने प्रवचनों में हमेशा बताते हैं। 'ऋषि प्रसाद' से महात्माओं को प्रवचन करने में बड़ी सुविधा रहती है। उसमें जो अच्छी-अच्छी बातें बतायी जाती हैं, उनको वे अपने प्रवचनों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाते हैं।

'ऋषि प्रसाद' वाकई में ऋषियों का प्रसाद है। यह जनता को परमात्मा-विषयक ज्ञान और परमात्मा की अनुभूति का आस्वादन कराता है।

'ऋषि प्रसाद' एक दर्पण है। दर्पण में समाज अपना सच्चा चेहरा देख सकता है। समाज में जो धर्मांतरण या कुसंग की प्रवृत्तियाँ होती हैं, उनको 'ऋषि प्रसाद' एक दर्पण की तरह हमें दिखाता है और उनको सत्संग के माध्यम से कैसे हम दूर कर सकते हैं उसका एक सुंदर रास्ता भी बताता है।

'ऋषि प्रसाद' घर का वैद्य है। इसे अगर घर में रखोगे तो यह आपके पूरे परिवार के रोग, शोक, विकार, मन की मलिनताएँ दूर करेगा। घर में जो मेहमान आयेंगे, वे भी इसे देखेंगे-पढ़ेंगे तो उनके भी विकार दूर करेगा।

यह एक ऐसी पत्रिका है जिसके द्वारा स्वयं के भले के साथ पूरे संसार का भला चाहने का काम होता है। आनेवाला समय 'ऋषि प्रसाद' का समय होगा। भारतीय संस्कृति का जो व्यापक प्रचार-प्रसार करना है, वह आशारामजी बापू के माध्यम से, उनकी अमृतमयी वाणी से ही तो होगा।

****

ऋषि दर्शन घर-घर में पहुँचनी चाहिए

- अवधूत महामंडलेश्वर स्वात्मबोधानंद पुरीजी

ईश्वर-साक्षात्कार की ज्योति जगाने में अत्यंत मददरूप 'ऋषि दर्शन' एक अद्भुत विडियो मैगजीन है। जिन्होंने भी इसे अपने घर में लगाया, उन सभीने बापू की महान लीलाओं का अपने घर में दर्शन पाया।

'ऋषि दर्शन' घर-घर में पहुँचनी चाहिए, जिससे आत्मसाक्षात्कारी महापुरुषों के अनुभव का लाभ लेकर हर कोई अपने हृदय को आनंदित कर सके।

प्रभुप्रीति की डोरी टूटने न पाये
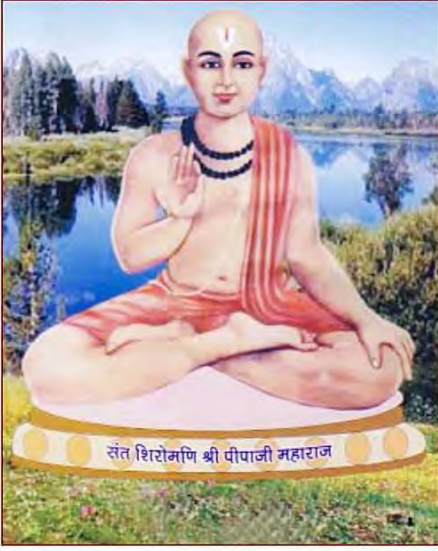
राजा सूर्यसेनमल संत पीपाजी का भक्त था लेकिन उसके राज्य के कुछ लोग पीपाजी से बहुत द्वेष करते थे । एक दिन दरबारियों व कुछ निंदकों ने भरे दरबार में संत पीपाजी एवं उनकी पत्नी के ऊपर घृणित आरोप लगा दिये ।

अभागा राजा निंदकों की बातों में आ गया और कहने लगा : ''यह बड़ी ही घटिया बात है ।'' उसको अपने सद्गुरु पीपाजी में संशय हो गया, अश्रद्धा हो गयी । उसने गुरुदेव का बताया हुआ धर्म-कर्म छोड़ दिया । हालाँकि संतों को किसीसे कोई अपेक्षा नहीं होती, वे अपने-आपमें पूर्ण संतुष्ट व तृप्त होते हैं । इसके बावजूद वे शिष्य की सूझबूझ, आध्यात्मिक स्थिति एवं साधना बनी रहे तथा उसके द्वारा की हुई सेवा का फल नष्ट न हो जाय इस हेतु प्रयत्न करते नजर आते हैं । इसका कारण है उनका परम दयालु व कृपालु स्वभाव तथा हमारे कल्याण की तीव्र भावना ।

संत पीपाजी को राजा की स्थिति के बारे में मालूम पड़ा तो उन्हें उस पर बहुत दया आयी । राजा को फिर से उन्नति के पथ पर लाने के उद्देश्य से वे दरबार में गये और अपने आने की सूचना भेजी । राजा ने सेवक को कहा : ''जा के कह दो कि मैं पूजा कर रहा हूँ ।''

पीपाजी बोले : ''राजा बड़ा मूढ़ है । वह तो मोची के पास बैठकर जूता बनवा रहा है और नाम पूजा का लेता है !''

द्वारपाल से पीपाजी के ये शब्द सुनकर राजा नंगे पाँव दौड़ा और आकर उनके चरणों में पड़ा ।

पीपाजी बोले : ''गुरु का अनादर और भगवान की पूजा के समय मन दूसरी जगह रखना, यह कौन-सी नीति-रीति है ?''

राजा क्षमा माँगते हुए बोला : ''हे गुरुदेव ! मुझ मंदबुद्धि ने आपकी महिमा को नहीं जाना था । अब आप मेरे ऊपर कृपा कीजिये ।''

फिर राजा ने निंदकों द्वारा बहकाये जाने की सारी बातें कह सुनायीं ।

पीपाजी बोले : ''अरे ! जिस दिन तू शिष्य हुआ था, उस दिन का अपना निश्चय स्मरण कर । रानी, राज्य आदि की लाज छोड़ के किस प्रेम-रंग में रँगा था, सो रंग तेरा कहाँ गया ? कहाँ गयी तेरी वह सूझबूझ ! तेरे पास जब गुरुकृपा का प्रत्यक्ष अनुभव था तो उसका सहारा न लेकर निगुरे निंदकों के बहकावे में क्यों आ गया ? जो खुद नरकगामी हो रहे हैं, ऐसे लोग तुझे क्या मार्ग दिखायेंगे ? तू किन्हें अपना मानता है - जो स्वार्थसिद्धि के लिए तेरा उपयोग करते हैं उन्हें या जो तेरा सच्चा हित चाहते हैं ऐसे सद्गुरु को ? निंदक लोग स्वार्थसिद्ध होने तक ही तेरा साथ देंगे फिर तुझे छोड़ देंगे जबकि गुरु, तू राजा रहेगा तब भी तेरे हैं और रंक हो जाय तब भी तेरे रहेंगे ।''

गुरु का उपदेश राजा सूर्यसेनमल के मन में बस गया । भगवद्भजन और साधु-सेवा में वह पहले से अधिक तत्पर व दृढ़ हो गया ।

गुरु और गुरुमंत्र शिष्य का तब तक पीछा नहीं छोड़ते हैं, जब तक शिष्य मुक्त नहीं हो जाता । किसी भी परिस्थिति में संतों में दोषदर्शन न होने दें, उनसे विमुख न हों । दृढ़ संकल्पवान बनें, सारी दुनिया उलटी होकर टँग जाय लेकिन प्रभुभक्ति का मार्ग छूटने नहीं देना चाहिए ।

परिस्थितियाँ कैसी भी आयें, कसौटी कैसी भी हो पर हर शिष्य के हृदय की पुकार होनी चाहिए :

ध्रुव अगर जगह से टले तो टल जाय ।
हिमालय वायु की ठोकर से भी फिसल जाय ।
समुद्र भी जुगनू की दुम से जल जाय ।
पर हे कृपालु गुरुवर !
इस हृदय से तेरा प्यार कम न हो पाये ।।

यातनाएँ सहकर भी जिन्होंने किया समाज का मंगल : संत तुकारामजी

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत तुकारामजी शरीर की सुध-बुध भूलकर भगवान विट्ठल के भजन-कीर्तन में डूबे रहते। भगवान की भक्ति में प्रगाढ़ता आयी और उनके श्रीमुख से अभंगों के रूप में शास्त्रों का गूढ़ ज्ञान प्रकट होने लगा। तुकारामजी की भगवद्रस से सम्पन्न वाणी से लोगों के रोग-शोक दूर होने लगे, समाज उन्नत होने लगा पर तुकारामजी की फैलती हुई यश-कीर्ति कुछ लोगों को खटकने लगी। उन्होंने अनेक प्रकार के तर्क-कुतर्क करके शंका-कुशंका उठाकर उन्हें तंग करना तथा समाज में बदनाम करना शुरू कर दिया। तब तुकारामजी अपने एक अभंग के माध्यम से कहते हैं :

कलियुगीं बहु कुशल हे जन।
छळितील गुण तुझे गाता ॥
मज हा संदेह झाला दोहींसवा।
भजन करूं देवा किंवा नको ॥

'कलियुग में लोग बड़े कुशल हैं। तुम्हारे गुण जो गायेगा उसे ये सतायेंगे। इसलिए मुझे यह संदेह हो गया है कि अब तुम्हारा भजन करूँ या न करूँ ?' हे नारायण ! अब यह बाकी रह गया है कि इन लोगों को छोड़ दूँ या मर जाऊँ !

दुष्टों के अत्याचार से तंग आकर वे कहते हैं : ''किसीके घर मैं तो भीख माँगने नहीं जाता, फिर भी ये काँटें जबर्दस्ती मुझे कष्ट देने आ ही जाते हैं। मैं न किसीका कुछ खाता हूँ, न किसीका कुछ लगता हूँ। जैसा समझ पड़ता है भगवन् ! तुम्हारी सेवा करता हूँ।''

नाना प्रकार के शुष्कवाद करनेवाले अहंमन्य विद्वान और भगवद्-भजन का विरोध करनेवाले मानो हाथ धोकर तुकारामजी के पीछे पड़े थे। अनेक प्रयास करने पर भी जब लोगों ने तुकारामजी के कीर्तन में जाना बंद नहीं किया तो उन्होंने तुकारामजी को देहू गाँव से निकालने का षड्यंत्र रचा। 'तुका ने हरि-कीर्तन करके भोले-भाले श्रद्धालु लोगों पर जादू कर दिया है, वह भक्ति नहीं पाखंड करता है।' इस प्रकार की और भी कई बेबुनियाद बातों से हाकिम (गाँव के मुखिया) के कान भरने शुरू कर दिये।

उधर दूसरी ओर वाघोली में रहनेवाले एक विद्वान रामेश्वर भट्ट को भी तुकारामजी के विरुद्ध भड़काया गया। ग्रामाधिकारी को रामेश्वर भट्ट ने चिट्ठी लिखी कि 'तुकाराम को देहू से निकाल दो।' ग्रामाधिकारी ने यह चिट्ठी तुकारामजी को पढ़ सुनायी तब वे बड़ी मुसीबत में पड़ गये। उस समय के उनके उद्गार हैं :

''अब कहाँ जाऊँ ? गाँव में रहूँ किसके बल-भरोसे ? पाटील नाराज, गाँव के लोग भी नाराज ! कहते हैं अब यह उच्छृंखल हो गया है, मनमानी करता है। हाकिम ने भी यही फैसला कर डाला। भले आदमी ने जाकर शिकायत की, आखिर मुझ दुर्बल को ही मार डाला। तुका कहता है ऐसों का संग अच्छा नहीं, अब विट्ठल को ढूँढ़ते चल चलें।''

इसे कलियुग का ही प्रभाव कहना चाहिए कि राजसत्ता भी संतों द्वारा हो रही समाज की उन्नति को दरकिनार करके धर्म के भक्षक ऐसे दुष्टों की हाँ-में-हाँ मिला देती है।

तुकारामजी को इतना मजबूर किया गया कि भगवान के विरह और प्रेम में निकले अभंगों की बही उन्हें दह नदी में डालनी पड़ी। आखिर तुकारामजी पर देशनिकाले की नौबत आ गयी, अपने श्री विट्ठल-मूर्ति से बिछुड़ने का समय आ गया। भक्तजनों को इससे बड़ा दुःख हुआ और कुटिल-खल-निंदक इससे बड़े सुखी हुए, मानो उन्हें कोई बड़ी सम्पत्ति मिल गयी हो। दूसरों का कुछ भी हीनत्व देखकर जिनकी जीभ निंदा करने के जोश में आ जाती है। ऐसे लोग तुकारामजी के पास आकर उनका तरह-तरह से उपहास करने लगे।

संत तुकारामजी ने देखा कि अपने ईश्वरीय समाधि-सुख का त्याग करके जिस समाज की भलाई के लिए अभंगों को लिपिबद्ध किया गया, उस समाज को ज्ञान के उस खजाने की जरा भी कद्र नहीं है। इस बात से तुकारामजी समाज से उपराम हो गये। वे श्री विट्ठल-मंदिर के सामने तुलसी के पौधे के समीप एक शिला पर तेरह दिन अन्न-जल त्याग के भगवत्-चिंतन में पड़े रहे। अंत में भगवत्कृपा से उनकी बहियाँ उन्हें पुनः प्राप्त हुईं, जो आज भी समाज को सही दिशा देने का कार्य कर रही हैं। उन निंदकों का क्या हाल हुआ होगा जिन्होंने ऐसे संत को १३-१३ दिनों तक अन्न-जल त्यागने पर मजबूर कर दिया!

वास्तव में समाज की उन्नति या अवनति से नीच बुद्धि के संस्कृतिद्रोहियों को कोई लेना-देना नहीं होता। वे तो अपने स्वभाववश द्वेषबुद्धि से प्रेरित होकर स्वार्थसिद्धि के लिए उचित-अनुचित कुछ भी कर डालते हैं।

नीच लोगों की टोली में मम्बाजी नाम का एक व्यक्ति था। जिसने अपने शिष्यों द्वारा तुकारामजी के विरोध में बहुत कुप्रचार करवाया परंतु उसका कोई भी परिणाम नहीं हुआ। तब उसने तुकारामजी के आँगन और विट्ठल-मंदिर के परिसर में काँटें बिखेरना प्रारम्भ कर दिया ताकि तुकारामजी को कष्ट हो और उनके कीर्तन में आनेवाले भक्तों को भी पीड़ा का सामना करना पड़े। जब इस पर भी उनके भक्तों की संख्या कम नहीं हुई तो मम्बाजी और बौखला गया। खूब सताकर भी उस दुष्ट का मन नहीं भरा तो एक दिन उसने मौका पाकर मंदिर परिसर में खूब गाली-गलौज करना शुरू कर दिया। हद तो तब हो गयी जब उस क्रूर ने काँटें लगी बबूल की टहनी से तुकारामजी को पीट-पीटकर कपड़े फाड़ दिये और शरीर लहू-लुहान कर दिया। वहाँ खड़े लोग चुपचाप सब देखते रहे।

आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस समाज को भक्ति, ज्ञान, कीर्तन, ध्यान के द्वारा सुखी बनाने के लिए संत समाजद्रोहियों के निशाने पर आ जाते हैं, वही समाज संत पर हो रहे अत्याचारों का मूक दर्शक बनकर रह जाता है। तुकारामजी के साथ भी यही हुआ।

मम्बाजी तुकारामजी के शिष्यों को भी उनके विरुद्ध भड़काने का कार्य करता था। वह बहिणाबाई (तुकारामजी की अनन्य भक्त) को तुकारामजी के कीर्तन में जाने से मना करता। जब बहिणाबाई ने तुकारामजी की निंदा का विरोध किया तो मम्बाजी के क्रोध की आग भभक उठी। उसने बहिणाबाई की गाय को बाँधकर बड़ी क्रूरता से उस पर डंडे चलाये। जब सीधी लड़ाई से मम्बाजी और उनके दुष्ट साथी अपने मंसूबों में कामयाब नहीं हुए तो उन्होंने कूटनीति का सहारा लिया। हर संत के खिलाफ ऐसे ही हथकंडे अपनाये जाते हैं। साजिश-पर-साजिश, षड्यंत्र-पर-षड्यंत्र... संतों को सताने की यह परम्परा कब समाप्त होगी ?

एक वेश्या को तैयार करके तुकारामजी को बदनाम कर लोगों की श्रद्धा तोड़ने की साजिश रची गयी पर मम्बाजी का यह वार भी खाली गया। इस प्रकार दुष्टों ने अनेक प्रकार से पवित्र, निष्कलंक संत तुकारामजी को सताया। समता के धनी तुकारामजी तो सब सहते गये परंतु सबसे बड़ा नुकसान तो समाज का ही हुआ जिसे उनके सुखप्रद ज्ञान से, भक्ति के अमृत से वंचित होना पड़ा।

आज लोग भारत के इन महान संत की महिमा गाते हैं, उनके अभंगों पर पीएच.डी. करते हैं, उनकी तस्वीरें लगाकर दीप-अगरबत्ती करते हैं लेकिन हयातीकाल में उन्हें कितना सताया गया! संतों के साथ ऐसा आखिर कब तक होता रहेगा ?

संत-सम्मेलन, अहमदाबाद

महामंडलेश्वर श्री परमात्मानंदजी : ५५ साल से मैं कथा कह रहा हूँ, ऐरी-गैरी जगह नहीं झुकता हूँ। आप पूछेंगे कि 'क्या आप बापूजी के चरणों में झुके हैं ?'

तो मैं कहूँगा : 'हमने सिर झुकाया नहीं, सिर अपने-आप झुका है।'

'बापू' किसे कहते हैं ? पिता का भी पिता... जो सबका पिता है, परम पिता है उसे 'बापू' कहते हैं। हमारे बापू छोटी-मोटी हस्ती नहीं हैं; वे वेदों के सार हैं, ईश्वर के अवतार हैं, ज्ञान-भक्ति के भंडार हैं।

आचार्य सुमितकृष्णजी, भागवत कथाकार, जम्मू : जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब धर्म की रक्षा के लिए भगवान स्वयं अवतार लेते हैं। और बापूजी के रूप में साक्षात् भगवान ने ही अवतार लिया तथा निःस्वार्थ भाव से माँ भारती की सेवा में लग गये। बापूजी ने जितनी सारी सेवाएँ की हैं, उनको गिनने में कोई अपनी पूरी जिंदगी लगा दे तो भी कभी गिन नहीं पायेगा।

पंडित गुरुजी, भागवत कथाकार : एक अकेले आशारामजी बापू ने १० करोड़ लोगों का संसार फलता-फूलता बनाया है। लाखों लोगों का चरित्र महान बनानेवाले, करोड़ों लोगों को मार्गदर्शन करनेवाले बापूजी पर जो कीचड़ उछालेगा, वह खुद ही निश्चित रूप से चरित्रहीन होगा। हम सब संत आशारामजी बापू के साथ अभी भी खड़े हैं और खड़े रहेंगे।

श्री सुरेन्द्र पाल, धारावाहिक 'महाभारत' के द्रोणाचार्य तथा 'देवों के देव महादेव' के प्रजापति दक्ष : हर इन्सान जो जीवन में निराश हो जाता है उसे बापूजी की जरूरत होती है। बापूजी उसको सही रास्ता दिखाते हैं, जीवन में आगे बढ़ने की राह बताते हैं, उसको फिर साहसी बनाते हैं।

बापूजी की अमृतवाणी सुनने से केवल भारतवासी ही धन्य नहीं हैं, पूरा विश्व धन्य है। बापूजी के सामने मैं एक बहुत ही छोटा-सा इन्सान हूँ। बापूजी सूर्य के समान हैं और मैं उनके सामने एक छोटा-सा दीया हूँ।

श्री शिवाभाई : पूज्य बापूजी ने हमें कठिन-से-कठिन परिस्थिति में सम रहना सिखाया है। केवल सिखाया ही नहीं बल्कि बापूजी ने खुद सम रहकर बताया है। जेल को भी बापूजी ने नंदनवन बना दिया। बापूजी वहाँ भी कुछ-न-कुछ सेवा करते रहते हैं तो हमको भी सेवा से पीछे नहीं हटना है।

मीडियावाले पूछ रहे थे कि ''आश्चर्य है ! इतना होने के बावजूद भी पूरे भारत में आपके संत-सम्मेलन चल रहे हैं, प्रभातफेरियाँ चल रही हैं, साधकों की श्रद्धा में कहीं कमी नहीं आ रही है, इसका क्या कारण है ?''

मैंने कहा : ''बापूजी पूरी तरह से निर्दोष हैं यह बात बापूजी का हर साधक व देश का हर जागरूक नागरिक भलीभाँति जानता है। बापूजी के साधकों की श्रद्धा कभी हिलनेवाली नहीं है।''

संत श्री रामचैतन्य बापू, महामंत्री, अखिल भारतीय साधु समाज : बापूजी ने हमको बहुत प्यार दिया है, सभी संतों को प्यार देते हैं। जब भी हमारी जरूरत पड़ेगी, हम बापूजी के लिए खड़े हैं।

श्री राजेन्द्रस्वरूपजी, श्रीराम कथाकार, मानसरोवर : बापूजीरूपी गंगा में पता नहीं कितने पुरुष, कितने जीवात्मा स्नान करके तर गये। और आगे भारत के सवा सौ करोड़ लोग इस गंगा में स्नान करेंगे, धरती के विभिन्न देशों में रहनेवाले लोग इस गंगा में स्नान करेंगे और एक बार पुनः यह धरती सतयुग को स्पर्श करेगी।

महामंडलेश्वर स्वामी श्री केशवानंदजी, सनातन सेवा मंडल, द्वारका (गुज.) : हिन्दुस्तान में हम हिन्दुओं को कमजोर करने के लिए सदा से ही संतों को बदनाम करने का षड्यंत्र होता आया है। परंतु किसी भी षड्यंत्र को भक्तों ने सफल नहीं होने दिया है और इस बार भी नहीं होने देंगे।

केवल मैं नहीं, आप नहीं, देश के बड़े-बड़े कायदे-कानून के जानकार, श्री राम जेठमलानी जैसे बड़े वकील, जिनके नीचे काम करके, वकालत करके कई लोग हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट के जज बने हैं, वे कह रहे हैं कि 'संत आशारामजी बापू निर्दोष हैं।' आप हम सभी कहें : 'आशारामजी बापू मुक्त हों, मुक्त हों... आशारामजी बापू निर्दोष हैं ! निर्दोष हैं !! निर्दोष हैं !!!'

महंत श्री विनोद कुमारजी, संत केशवदास दरबार (अहमदाबाद) : दुःख की बात है कि जो देश की राष्ट्रीय अखंडता को खंड-खंड करते हैं, दोषी साबित हो चुके हैं, उनको बार-बार पेरोल पर छुट्टी दी जाती है। जो हमारी राष्ट्रीय अखंडता को खंड-खंड करने के लिए कहता है : 'मुझे गिरफ्तार करके तो दिखाओ ! मैं बैठा हूँ, किसकी हिम्मत है ?' उनके लिए कोर्ट के ऑर्डर-पर-ऑर्डर निकलते हैं लेकिन गिरफ्तार नहीं किया जाता। और हमारे बापूजी को, एक निरपराध, निर्दोष संत को जेल में डाल दिया जाता है। यह कहाँ का न्याय है ? हम हिन्दुओं को संगठित होकर आवाज उठानी होगी।

समाज बापूजी का युगों-युगों तक ऋणी रहेगा

- अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त जादूगर आँचल, उदयपुर (राज.)

मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ कि बापूजी की मेरे ऊपर असीम कृपा रही है । बापूजी से प्राप्त सारस्वत्य मंत्र और गुरुमंत्र का ही प्रभाव है कि सालभर में लगातार १० महीने मेरे शो रहने के बावजूद मैं पढ़ाई के क्षेत्र में हमेशा अव्वल रही हूँ।

कई आदिवासी क्षेत्रों में लोगों को प्रलोभन देकर मिशनरियाँ धर्म-परिवर्तन का घिनौना कार्य कर रही हैं । बापूजी ने अपने सत्संग आदि के द्वारा उन लोगों का अपने धर्म में वापस लाने का पावन कार्य किया है । इसीलिए बापूजी को एक खतरनाक षड्यंत्र के तहत फँसाया गया है ।

बापूजी ने वर्षों से अपने सत्संग व सत्साहित्य के द्वारा करोड़ों लोगों का उद्धार किया है, करोड़ों लोगों ने बापूजी के सान्निध्य में आकर अपने व्यसन छोड़े हैं, अपने जीवन का परिवर्तन किया है । समाज पूज्य बापूजी का युगों-युगों तक ऋणी रहेगा ।

आचार्य राजेन्द्रप्रसाद शास्त्रीजी : संत आशारामजी बापू पावन हैं । रामायण में आता है कि जिस व्यक्ति के संग में आने से जीवन से शोक चला जाय वह व्यक्ति पावन है, महापुरुष है । बापूजी के संग में आने से करोड़ों लोगों के जीवन से शोक चला गया, मोह छूट गया, भ्रम ने विदाई ली । फिर भी आज बापूजी के चरित्र पर छींटे उछाले जा रहे हैं, यह नालायकों का काम है ।

बापू ने बड़े पैमाने पर धर्मांतरण को रोकने का कार्य एवं दरिद्र-नारायणों की सेवा की है । इस संसार में साधु के सारे लक्षण, सारे धर्म किसीने अपने जीवन में अपनाये हों तो वे पूज्य संत श्री आशारामजी बापू हैं ।

श्री चंदनजी महाराज, अध्यक्ष, बाँके बिहारी कला संस्थान, वृंदावन : निश्चित रूप से बापूजी महापुरुष हैं और ऐसे महापुरुष यदा-कदा इस भूमि पर जनकल्याण के लिए आते हैं । बापूजी का कोई भी दोष नहीं है फिर भी उनके ऊपर दोष लगाये गये हैं ।

संत श्री अरविंदजी महाराज, शिरडी (महा.) : आदमी के चरित्र को बदलने का सामर्थ्य तो सिर्फ बापूजी में है । कानून और दंड के भय से समाज को नहीं सुधारा जा सकता, समाज-सुधार का कार्य तो परम पूज्य बापू आशारामजी ने करके दिखाया है । वे गुरु नहीं सद्गुरु हैं !

साँईं लीलारामजी, भाऊ परसरामजी झूलेलाल मंदिर के गादीसर : बापूजी ने सबको अच्छी शिक्षा दी कि 'आप प्रेम करो अपने माता-पिता से । उनकी सेवा करो, उनकी इज्जत करो, उनका मान-सम्मान करो ।' मैं बापूजी को प्रणाम करता हूँ और लालसाँईं से प्रार्थना करता हूँ कि बापूजी जल्दी बाहर आ जायें ।

****

मैं भी चाहूँगी ऐसा मार्गदर्शन

- उल्का गुप्ता, 'झाँसी की रानी' धारावाहिक की रानी लक्ष्मीबाई

यह जानकर मैं काफी खुश हूँ कि बापूजी ने १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' रखा। अब मैं सही मायने में जान पा रही हूँ कि गुरु-शिष्य का रिश्ता कैसा होता है और मैं काफी खुश हूँ कि आप (साधक) अपने बापूजी पर इतना विश्वास रखते हैं, उनसे इतना प्रेम करते हैं ! तो जरूर ही आप सभीको एक बहुत अच्छा मार्गदर्शन मिला होगा। मैं भी चाहूँगी ऐसा मार्गदर्शन भगवानस्वरूप बापूजी से।

कबीरपंथी स्वामी मार्ग्यस्मितजी, विश्वमंगल आश्रम (गुजरात) : संत आशारामजी बापू ने जनता को ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग बताया। अरे, मंत्रदीक्षा देकर अमरता के द्वार खोल दिये।

भागवताचार्य श्री खगेन्द्रजी महाराज, शहादा (महाराष्ट्र) : हमारे माँ-बाप, गुरु इन सबका एकत्रीकरण जिनमें है, वे हमारे बापू हैं।

अक्षर किसीको लगता है कि 'आकाश में तलवार घुमाकर मैं सूरज के टुकड़े कर दूँगा' तो यह पागलपन है। बापू आकाश के सूरज हैं, तेरा तलवार घुमाना ही व्यर्थ है।

शंख मुद्रा

लाभ : (१) नाभि व कंठस्थ ग्रंथियों के विकार ठीक होते हैं।

(२) इस मुद्रा का दीर्घ काल तक अभ्यास करने से वाणी के दोष निवृत्त होते हैं।

(३) आवाज की मधुरता और गुणवत्ता बढ़ती है।

(४)गला बैठ जाने की तकलीफ में राहत मिलती है।

(५) स्नायुओं और पाचन संस्थान का कार्य सुचारु रूप से होने लगता है।

(६) आँतों एवं पेड़ू के रोग ठीक होते हैं।

विधि : बायें हाथ का अँगूठा दायें हाथ की मुट्ठी में पकड़ें और बायें हाथ की तर्जनी दायें हाथ के अँगूठे के अग्रभाग को लगायें।

बायें हाथ की अन्य उँगलियाँ दायें हाथ की उँगलियों पर किंचित्-सी दबायें। थोड़ी देर बाद हाथों को अदल-बदलकर पुनः यही मुद्रा करें।

इस मुद्रा में एक हाथ के अँगूठे का दबाव दूसरे हाथ की हथेली पर पड़ता है और दूसरे हाथ की मुड़ी हुई उँगलियों का दबाव उसी हाथ के अँगूठे के नीचे की गद्दी पर पड़ता है। इस प्रकार यह दबाव नाभि व कंठस्थ ग्रंथियों के केन्द्रों को प्रभावित करता है। यह मुद्रा किसी भी समय कर सकते हैं।

जिन्होंने पिलाया भक्तिरस, उन्हें हमने क्या दिया ?

किसी भी संत की जीवन-गाथा देखेंगे तो यह जानने को मिलेगा कि उन्हें अपने जीवन में कई यातनाएँ सहनी पड़ीं। भक्तिमती मीराबाई भी ऐसी ही एक संत थीं जिन्होंने अपने जीवन में अति कष्ट सहा परंतु भगवद्भक्ति का मार्ग नहीं छोड़ा।

मीराबाई का देवर राणा विक्रमादित्य नासमझ और कुबुद्धि था। वह मीराबाई के भजन-पूजन, सत्संग में विघ्न उत्पन्न करने लगा। इसका प्रमाण मीराबाई के इस पद में आता है :

सासू लड़े म्हारी नणद खिजावे देवर रह्यो रिसाय।
पेहरो बिठायो चौकी मेली तालो दियो जड़ाय॥

मीराबाई को प्रताड़ित करने के लिए राणा विक्रमादित्य ने कई नीच हथकंडे अपनाये। उसने मीराबाई के लिए भगवान का चरणामृत बताकर हलाहल विष भेजा। विष-प्रयोग असफल रहा तो एक पिटारी में काला नाग बंद करके शालिग्राम के नाम से भेजा। मीराबाई कहती हैं :

राणा भेज्या विष रा प्याला चरणामृत कर पी जाणा॥
काला नाग पिटार्‍यां भेज्या शालगराम पिछाणा।

कभी जहरीले तीक्ष्ण काँटोंवाली शैय्या (शूल सेज) मीरा के लिए भेजी गयी तो कभी मीरा को भूखे शेर के पिंजड़े में पहुँचा दिया गया लेकिन मीराबाई को मारने के ये सभी दुष्प्रयत्न असफल साबित हुए।

एक बार मीराबाई की ख्याति सुनकर उनके कीर्तन में आया अकबर भावविभोर हुआ और उसने एक मोतियों की माला रणछोड़जी के लिए मीराबाई को भेंट कर दी। इस वजह से राणा द्वारा मीरा पर चारित्रिक लांछन लगाया गया और मीराबाई की काफी बदनामी हुई। (इस प्रसंग का उल्लेख 'भक्तमाल' में मिलता है।)

सोचने की बात है कि जिनके पदों को, वचनों को पढ़-सुनकर और गा के लोगों के विकार मिट जाते हैं, ऐसे मीराबाई जैसे पवित्र संतों पर लगाये गये चारित्रिक लांछन क्या कभी सत्य हो सकते हैं ? और उन्हें सत्य मान के उनसे लाभान्वित होने से वंचित रहनेवाले भोले लोगों का कैसा दुर्भाग्य !

अब राणा इतना क्षुब्ध हो उठा कि उसने स्वयं अपने हाथों से मीराबाई को मारने का निश्चय किया। तलवार लेकर उन्हें मारने के लिए उद्यत हुआ परंतु ईश्वरकृपा से वह इसमें भी सफल न हो सका।

इस प्रकार मीराबाई के लिए नित्य नयी विपत्तियाँ आने लगीं। कई दिनों तक ऐसी स्थिति बनी रहने पर वे ऊब गयीं। प्रभु-भक्ति के मार्ग में सतत आ रही कठिनाइयों के समाधान के लिए मीराबाई ने संत तुलसीदासजी के पास एक पत्र भेजा। जिसमें लिखा था :

घर के स्वजन हमारे जेते, सबनि उपाधि बढ़ाई।
साधु संग और भजन करत, मोंहि देत कलेश महाई।...

ईमानदारी से आज्ञापालन ही कर्तव्य

एक आस्तिक व्यक्ति ने एक रात्रि को स्वप्न में देखा कि ईश्वर उसके सम्मुख खड़े होकर कह रहे हैं : ''तुम्हारी मेरे प्रति दृढ़ निष्ठा है, अतः मैं तुम्हें एक कार्य सौंप रहा हूँ। सुबह तुम्हारे घर के बाहर तुम्हें एक बड़ी-सी चट्टान नजर आयेगी। तुम्हें केवल उसे धकेलने का कार्य करना है।'' उस दृढ़ निष्ठावान व्यक्ति ने बिना 'किंतु-परंतु' किये उनके आदेश को मान लिया।

सुबह उसने देखा कि घर के बाहर वास्तव में एक बड़ी-सी चट्टान खड़ी है। वह अपना पूजा-पाठादि नित्यकर्म निपटाकर उस चट्टान को धकेलने में जुट गया। आते-जाते लोग उसे आश्चर्य से देख रहे थे। सुबह से शाम हो गयी पर चट्टान अपने स्थान से तिलभर भी नहीं सरकी। दूसरे दिन पुनः वह उसी कार्य में लग गया। दिन पर दिन बीतने लगे पर चट्टान तो हिल ही नहीं रही थी। सभी लोग उसे समझाते थे कि 'चट्टान नहीं खिसकेगी, तुम व्यर्थ प्रयास मत करो।' पर वह मिली हुई सेवा में लगा ही रहा। इस दौरान उसका कमजोर तन-मन काफी मजबूत हो गया। पर लोगों के ताने सुन-सुनकर उसके मन में कभी-कभी निराशा का विचार भी आने लगा कि 'इतने प्रयत्न के बावजूद चट्टान तो रत्तीभर भी नहीं खिसकी है। उसे लगा कि 'अब मुझे ईश्वर से अनुमति लेकर यह कार्य बंद कर देना चाहिए।'

ऐसा विचार कर वह रात को ईश्वर का चिंतन करते-करते सो गया। स्वप्न में उसे ईश्वर के दर्शन हुए। उसने पूछा कि ''हे नाथ ! चट्टान तो खिसक ही नहीं रही है ! लोग भी बहुत खरी-खोटी सुनाने लगे हैं। अब हे देव ! इस कार्य को क्या मैं रोक दूँ ?''

ईश्वर मुस्कराये और बोले : ''मिली हुई सेवा करते-करते अब तुम मजबूत हो गये हो और जहाँ तक चट्टान को खिसकाने का कार्य है, वह तुम्हारा नहीं मेरा है। तुम्हें जो करने के लिए कहा गया था वह तुमने ईमानदारी से किया। चट्टान तो मेरे संकल्पमात्र से ही खिसक जायेगी। मुझे देखना था कि तुम असफलता देखकर घुटने टेक देते हो या धैर्य एवं सहनशीलता पूर्वक अपने भाग्य में आयी सेवा को निभाते जाते हो। मेरे कहलानेवाले भक्त तो बहुत हैं पर तुम मेरे सच्चे भक्त हो क्योंकि तुमने सेवा नहीं छोड़ी।''

उस भक्त के मन में प्रवेश कर रही निराशा भाग गयी। वह अब पहले से भी अधिक उत्साह, तत्परता एवं निष्ठा से अपनी सेवा में लग गया। कुछ दिन बीते और उसने देखा कि चट्टान काफी आगे खिसक गयी है।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''परिणाम की चिंता किये बिना उत्साह, धैर्य और कुशलतापूर्वक कर्म करनेवाला सफलता प्राप्त कर लेता है। अगर वह निष्फल भी हो जाय तो हताश-निराश नहीं होता बल्कि विफलता को खोजकर फेंक देता है और फिर तत्परता से उद्देश्यपूर्ति में लग जाता है।''

****

(पृष्ठ ३१ 'जिसने पीलाया...' का शेष) पत्र के जवाब में संत तुलसीदासजी ने लिखा :

जाके प्रिय न राम-बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ॥...

चाहे कोई हमारा परम स्नेही क्यों न हो, अगर ईश्वर की भक्ति में बाधक बने तो वह करोड़ों वैरियों के समान है। मीराबाई को भक्ति में विघ्नों के चलते आखिर अपनी ससुराल चित्तौड़ को छोड़ना पड़ा।

जिनके द्वारा रचित भजनों को गाकर लोगों की भक्ति बढ़ती है, ऐसी महान भक्तिमती मीराबाई को दुष्टों ने कष्ट देने में कोई कमी नहीं छोड़ी परंतु मीराबाई तो अपने गाये भगवद्-भजनों के रूप में सभीके हृदय में आज भी अमिट स्थान बनाये हुए हैं। भगवद्भक्ति, भगवद्ज्ञान देने में एवं जनसेवा करने-कराने में रत संतों-महापुरुषों पर अत्याचार करने का सिलसिला बंद नहीं हुआ है, वह तो आज भी चल रहा है। समाज को जागृत होने की आवश्यकता है।

यह आश्चर्य नहीं तो क्या है !

मैं 'दिव्य भास्कर' समाचार पत्र में रिपोर्टर हूँ। मुझे पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने का सौभाग्य वर्ष २०१२ में मिला था।

१८ अप्रैल २०१३ को अचानक मेरे पेट में दर्द हुआ। डॉक्टर को दिखाया तो उन्होंने बड़े अस्पताल में जाने की सलाह दी। वहाँ जाँच में पता चला कि लीवर के दोनों तरफ १-१ एम.एम. की गाँठें हो गयी हैं। मुझे भर्ती कर लिया गया। वहाँ २१ अप्रैल से ४ मई तक मुझे सलाइन की ९१ बोतलें चढ़ाई गयीं। इसके बाद डॉक्टर ने ऑपरेशन कराने को कहा, जिसमें ४ लाख रुपये का खर्च बताया।

इतना पैसा खर्च करने की मेरी आर्थिक स्थिति नहीं थी। ऊपर से ऑपरेशन का नाम सुनकर मैं बहुत परेशान हो गया। मैंने आश्रम में सम्पर्क किया तो एक साधक ने कहा कि "बापूजी जरा-जरा बात पर ऑपरेशन के लिए मना करते हैं।" फिर उन्होंने ऑपरेशन नहीं कराने की सलाह दी और पूज्य बापूजी द्वारा दीक्षा के समय दिये जानेवाले आशीर्वाद मंत्र का जप करने को कहा, साथ ही आश्रम के बड़ बादशाह का जल पीने के लिए भिजवाया। मैंने ४ मई से जप करना व जल पीना चालू कर दिया। ६ मई की शाम को ऑपरेशन होना था तो मैं ५ मई को पूरी रात बापूजी से प्रार्थना व मंत्र का जप करता रहा। अगले दिन दोपहर को फिर से सोनोग्राफी की गयी तो रिपोर्ट देख डॉक्टर आश्चर्य से बोले : "लीवर के पास की दोनों गाँठें दिख नहीं रही हैं। यह तो चमत्कार हो गया ! अब आपको ऑपरेशन कराने की जरूरत नहीं है।"

मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। पूज्य बापूजी ने आर्थिक व शारीरिक दोनों हानियों से बचा लिया। मंत्रदीक्षा के बाद से मुझे ऐसा लगता है कि बापूजी सदैव मेरे साथ ही हैं।

- भोमाराम के. सुथार, बड़ौदा, मो. : ९९०९६०२९९९

अनुत्तीर्ण विद्यार्थिनी बनी महाविद्यालय की टॉपर

मेरा गणित विषय बहुत कमजोर था, जिससे महाविद्यालय में पास होना मुझे चुनौती-सा लगता था। मेरी जन्मकुंडली में लिखा था कि 'मेरी पढ़ाई छूट जायेगी' और हुआ भी ऐसा ही महाविद्यालय की प्रथम वर्ष की परीक्षा में मैं पास नहीं हो सकी और मेरी पढ़ाई छूट गयी। परंतु मेरे सद्गुरुदेव बापूजी ने मेरे लेख पर मेख मार दी और मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। चेटीचंड के अवसर पर अहमदाबाद में मैंने गुरुमंत्र लिया और फिर से पढ़ाई चालू की।

गुरुमंत्र लेने के बाद मेरी किस्मत के सितारे ऐसे तो चमके कि मैं हर सेमेस्टर में आगे बढ़ती चली गयी। आखिर पूज्य बापूजी की कृपा से मैं सरदार पटेल विश्वविद्यालय (गुजरात) में प्रथम आयी। अब मैं एन्वायरमेंट बायोटेक में मास्टर्स कर रही हूँ।

कहाँ तो मैं एक सामान्य विद्यार्थिनी थी जो गणित विषय में अनुत्तीर्ण हो जाती थी और वही विद्यार्थिनी पूरी यूनिवर्सिटी में प्रथम आयी। यह सब पूज्य बापूजी की कृपा से हुआ। पूज्यश्री ने हमें हमेशा हर मुश्किल घड़ी से उबारा है। बापूजी के श्रीचरणों में मेरी श्रद्धा-भक्ति हमेशा बढ़ती रहे यही मेरी प्रार्थना है।

जिन्होंने पूरी दुनिया में संयम-शिक्षा, निःस्वार्थ समाज-सेवा, देश-सेवा, गौ-सेवा और भक्ति-ज्ञानयोग की गंगा बहाकर करोड़ों लोगों को पवित्र किया है, ऐसे परम पवित्र पूज्य बापूजी पर षड्यंत्र करके जो आरोप लगाये जा रहे हैं वे सब-के-सब पूरी तरह झूठे और मनगढ़ंत हैं। मैं उनका खंडन करती हूँ।

- इंखना रमेशभाई पटेल, बालासिनोर (गुज.)

गर्मियों में बलप्रद व स्वास्थ्यवर्धक

पका आम बहुत ही पौष्टिक होता है। इसमें प्रोटीन, विटामिन व खनिज पदार्थ, कार्बोहाइड्रेट तथा शर्करा विपुल मात्रा में होते हैं।

आम मीठा, चिकना, शौच साफ लानेवाला, तृप्तिदायक, हृदय को बलप्रद, वीर्य की शुद्धि तथा वृद्धि करनेवाला है। यह वायु व पित्त नाशक परंतु कफकारक है तथा कांतिवर्धक, रक्त की शुद्धि करनेवाला एवं भूख बढ़ानेवाला है। इसके नियमित सेवन से रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ती है।

शुक्रप्रमेह आदि विकारों के कारण जिनको संतानोत्पत्ति न होती हो, उनके लिए पका आम लाभकारक है। कलमी आम की अपेक्षा देशी आम जल्दी पचनेवाला, त्रिदोषशामक व विशेष गुणयुक्त है। रेशासहित, मीठा, पतली या छोटी गुठलीवाला आम उत्तम माना जाता है। यह आमाशय, यकृत व फेफड़ों के रोग तथा अल्सर, रक्ताल्पता आदि में लाभ पहुँचाता है। इसके सेवन से रक्त, मांस आदि सप्तधातुओं तथा वसा की वृद्धि और हड्डियों का पोषण होता है। यूनानी डॉक्टरों के मतानुसार पका आम आलस्य दूर करता है, मूत्र साफ लाता है, क्षयरोग (टी.बी.) मिटाता है तथा गुर्दे व मूत्राशय के लिए शक्तिदायक है।

औषधि-प्रयोग

भूखवृद्धि : आम के रस में घी और सोंठ डालकर सेवन करने से जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

वायु रोग या पाचनतंत्र की दुर्बलता : आम के रस में अदरक मिलाकर लेना हितकारी है।

✲ शहद के साथ पके आम के सेवन से प्लीहा, वायु और कफ के दोष तथा क्षयरोग दूर होता है।

आम का पना : केरी (कच्चा आम) को पानी में उबालें अथवा गोबर के कंडे की आग में दबा दें। भुन जाने पर छिलका उतार दें और गूदा मथकर उसमें गुड़, जीरा, धनिया, काली मिर्च तथा नमक मिलाकर दोबारा मथें। आवश्यकता अनुसार पानी मिलायें और पियें।

लू लगने पर : ✲ उपरोक्त आम का पना एक-एक कप दिन में २-३ बार पियें।

✲ भुने हुए कच्चे आम के गूदे को पैरों के तलवों पर लगाने से भी लू से राहत मिलती है।

वजन बढ़ाने के लिए : पके और मीठे आम नियमित रूप से खाने से दुबले-पतले व्यक्ति का वजन बढ़ सकता है।

दस्त में रक्त आने पर : छाछ में आम की गुठली का २ से ३ ग्राम चूर्ण मिलाकर पीने से लाभ होता है।

पेट के कीड़े : सुबह चौथाई चम्मच आम की गुठलियों का चूर्ण गर्म पानी के साथ लेने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

प्रदर रोग : आम की गुठली का २ से ३ ग्राम चूर्ण शहद के साथ चाटने से रक्त-प्रदर में लाभ होता है।

दाँतों के रोग : आम के पत्तों को खूब चबा-चबाकर थूकते रहने से कुछ ही दिनों में दाँतों का हिलना और मसूड़ों से

खून आना बंद हो जाता है। आम की गुठली की गिरी के महीन चूर्ण का मंजन करने से पायरिया ठीक होता है।

घमौरियाँ : आम की गुठली के चूर्ण से स्नान करने से घमौरियाँ दूर होती हैं।

पुष्ट व सुडौल शरीर : यदि एक वक्त के आहार में सुबह या शाम केवल आम चूसकर जरा-सा अदरक लें तथा डेढ़-दो घंटे बाद दूध पियें तो ४० दिन में शरीर पुष्ट व सुडौल हो जाता है। आम और दूध एक साथ खाना आयुर्वेद की दृष्टि से विरुद्ध आहार है। इससे आगे चलकर चमड़ी के रोग होते हैं।

सावधानी : खाने के पहले आम को पानी में रखना चाहिए। इससे उसकी गर्मी निकल जाती है। भूखे पेट आम नहीं खाना चाहिए। अधिक आम खाने से गैस बनती है और पेट के विकार पैदा होते हैं। कच्चा, खट्टा तथा अति पका हुआ आम खाने से लाभ के बजाय हानि हो सकती है। कच्चे आम के सीधे सेवन से कब्ज व मंदाग्नि हो सकती है।

बाजार में बिकनेवाला डिब्बाबंद आम का रस स्वास्थ्य के लिए हितकारी नहीं होता है। लम्बे समय तक रखा हुआ बासी रस वायुकारक, पचने में भारी एवं हृदय के लिए अहितकर है।

मोसम्बी का रस

यह बल व रक्त वर्धक, शक्तिदायक एवं रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ानेवाला है। बीमार लोगों के लिए मोसम्बी अमृत के समान है।

शरीर थकने व मन के ऊब जाने पर मोसम्बी अथवा इसके रस का सेवन करें तो थकान, बेचैनी दूर होकर स्फूर्ति व प्रसन्नता बढ़ती है। मोसम्बी का रस यकृत, आँतों तथा पाचनतंत्र को शुद्ध करके उन्हें सतेज बनाता है।

मोसम्बी चूसने से दाँतों की सफाई होती है व भोजन सरलता से पचता है। सर्दी-जुकामवालों को मोसम्बी का रस हलका गर्म करके उसमें २-४ बूँद अदरक के रस की डालकर पीना चाहिए।

रस की मात्रा : २५०-५०० मि.ली.

रुचिकर व पोषक नारियल पानी

सुबह चाय के बदले नारियल पानी में नींबू का रस निचोड़कर पीने से शरीर की सारी गर्मी मूत्र एवं मल के साथ निकल जाती है और रक्त शुद्ध होता है। बच्चों में कृमि तथा उलटी में भी यह नींबूयुक्त पानी लाभकारी है। हृदय, यकृत एवं गुर्दे के रोगों में यह लाभप्रद है। यह दवाइयों के विषैले असर को नष्ट कर देता है।

दक्षिण भारत में स्तनपान करानेवाली माँ का दूध कम हो जाने पर गाय के दूध में नारियल का पानी मिलाकर पिलाते हैं। इससे शिशु नारियल के पानी के कारण गाय के दूध को पचा लेते हैं।

हैजे में नारियल का पानी आशीर्वादस्वरूप है। हैजे के विषाक्त कीटाणु आँतों में जाते हैं। नारियल का पानी उन सबको निकाल देता है। साथ ही शरीर में कम हुए सोडियम एवं पोटैशियम की पूर्ति कर जलीय अंश की वृद्धि करता है। 'स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन' के विशेषज्ञों का मत है कि हैजे में पोटैशियम सॉल्ट के इंजेक्शन देने के बजाय नारियल के पानी में निहित प्राकृतिक पोटैशियम देना लाभदायी है।

टाइफाइड, कोलाइटिस, चेचक, पेचिश व अतिसार में नारियल का पानी अधिक हितकारी होता है। गर्भवती

महिलाएँ यदि रोज नारियल पानी पीती हैं तो बालक सुंदर पैदा होता है।

१०० ग्राम नारियल पानी में निम्नानुसार तत्त्व पाये जाते हैं :

कार्बोहाइड्रेट - ३.७१ ग्राम, प्रोटीन - ०.७२ ग्राम, लौह - ०.२९ मि.ग्राम, कैल्शियम - २४ मि.ग्राम, फॉस्फोरस - २० मि.ग्राम, सोडियम - १०५ मि.ग्राम, पोटैशियम - २५० मि.ग्राम, विटामिन 'सी' - २.४ मि.ग्राम, ऊर्जा - १९ किलो कैलोरी

इनके अलावा मैग्नेशियम तथा क्लोरीन आदि खनिज तत्त्व भी होते हैं।

पुण्यदायी तिथियाँ

२१ मई : बुधवारी अष्टमी (सुबह ७-३५ से २२ मई प्रातः ५-२९ तक)

२४ मई : अपरा-जलक्रीड़ा-भद्रकाली एकादशी (ब्रह्महत्या, भ्रूणहत्या, परनिंदा आदि पापों को दूर करनेवाला व्रत)

१ जून : रविपुष्यामृत योग (रात्रि १-५९ से २ जून सूर्योदय तक)

९ जून : निर्जला-भीम एकादशी (वर्षभर की एकादशियों का फल देनेवाला तथा मेरु पर्वत के समान पापों को भस्म करनेवाला व्रत। इस दिन किया गया स्नान, दान, जप, होम आदि सब अक्षय होता है।)

१५ जून : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सुबह ११-०३ से शाम ५-२७ तक) (जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल ८६,००० गुना - पद्म पुराण)

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

(१) किन चिरंजीवी का आदर-सम्मान ऋषि-मुनि भी करते हैं, जो पहले दासीपुत्र थे ?

(२) किन संत को दुष्टों की वजह से १३ दिनों तक अन्न-जल त्यागना पड़ा और उन्हें बदनाम करने के लिए वेश्या भेजी गयी ?

(३) इन्द्रियों के सो जाने के बाद भी कौन जागता रहता है ?

(४) किस दुष्ट ने एक संत को मारने के लिए बहुत-से कापालिकों को भेजा था ?

(५) किसकी गुठली के चूर्ण से स्नान करने से घमौरियाँ दूर होती हैं ?

पिछले अंक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) फल (२) 'पेड न्यूज' (३) संगठित (४) संत (५) सुप्रचार

प्रेरक अमृतबिंदु

* सुदृढ़ अचल संकल्पशक्ति के आगे मुसीबतें इस प्रकार भागती हैं जैसे आँधी-तूफान से बादल बिखर जाते हैं।

* प्रकृति प्रसन्नचित्त एवं उद्योगी कार्यकर्ता को हर प्रकार से सहायता करती है।

* हम यदि निर्भय होंगे तो शेर को भी जीतकर उसे पाल सकेंगे। यदि डरेंगे तो कुत्ते भी हमें फाड़ खायेंगे।

(आश्रम से प्रकाशित 'जीवन रसायन' पुस्तक से)

करोड़ों में कोई एक भगवत्प्राप्त मनुष्य होता है और उनमें भी कोई विरला ही होता है जो भगवान को मिला सके। कोई कहे कि भगवत्प्राप्त पुरुष मार्ग तो बतला सकते हैं। यह ठीक है तो फिर लोग इतने अच्छे मार्ग पर क्यों नहीं चलते ? इसका उत्तर यही है कि इस विषय में उन्हें विश्वास नहीं है। इसी कारण समस्त संसार की यह दशा हो रही है।

बात रही महापुरुष की दया की, भगवान की दया की वह तो सतत रहती ही है। फिर भी काम नहीं होता तो यह मानना पड़ेगा कि हमें उनकी दया में विश्वास नहीं है। हमने उनकी दया को माना नहीं है, बात वास्तव में यही है।

'विश्व सेवा-सत्संग दिवस' के रूप में मनाया गया पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस

लोक-मांगल्यकारी अभियानों का हुआ नवीनीकरण

४२५ से अधिक आश्रम, १४०० सेवा समितियाँ, १७००० से अधिक बाल संस्कार केन्द्र, हजारों युवा सेवा संघ व महिला उत्थान मंडल तथा विश्वभर में फैले करोड़ों साधक अपने प्यारे सद्गुरुदेव पूज्य बापूजी की समाज-सेवा की सीख जीवन में अपनाकर उनका अवतरण दिवस (२० अप्रैल) 'विश्व सेवा-सत्संग दिवस' के रूप में मनाते हैं तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को समाज में सुदृढ़ करते हैं। पूरे साल चलनेवाले २७ मुख्य सेवा अभियान जैसे - बेरोजगारों, वृद्धों आदि के लिए 'भजन करो, भोजन करो, रोजी पाओ' योजना, मरीजों में फल आदि का वितरण, गरीबों में जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण, संकीर्तन यात्राएँ, भंडारे, शरबत व छाछ वितरण, चल-चिकित्सालय, जेलों में कैदी उत्थान कार्यक्रम, गर्मी से राहत के लिए टोपी-वितरण आदि के अलावा अन्य अनेक सेवा अभियानों का नवीनीकरण पूज्यश्री के अवतरण दिवस पर हुआ।

इस बार १९ व २० अप्रैल को सोशल मीडिया वेबसाइट 'ट्विटर' पर 'विश्व सेवा-सत्संग दिवस' विषय बहुचर्चित रहा।

इस दिन केवल भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विभिन्न सेवाकार्यों के अलावा श्री पादुका पूजन, श्री आशारामायण का पाठ, पूज्यश्री का विडियो सत्संग, भजन-कीर्तन आदि कार्यक्रमों के साथ अवतरण दिवस महोत्सव मनाया गया। कनाडा में ब्राम्पटन, ओंटेरियो में 'बाल संस्कार केन्द्र' के बच्चों ने इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किये व बालभोज का भी आयोजन हुआ। सेन जोस (कैलिफोर्निया) में 'फैमिली सपोर्टिव हाउसिंग' नामक अनाथालय के बच्चों में भोजन-सामग्री व कपड़े बाँटे गये। शारजाह, बोस्टन, काठमांडू (नेपाल), दुबई, न्यूजर्सी आदि स्थानों में भी हवन, जप, पाठ, गरीबों में वस्तु-वितरण आदि कार्यक्रम हुए।

समाज के प्रतिष्ठितों ने भी लिया अवतरण दिवस का लाभ

रीवा (म.प्र.) में राज्य शासन के ऊर्जा, खनिज साधन एवं जनसम्पर्क मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ला ने अवतरण दिवस के कार्यक्रम में आकर दीप प्रज्वलित किया। लुधियाना (पं.) की प्रभातफेरी में विधायक सिमरजीत सिंह बैंस सम्मिलित हुए। होशियारपुर आश्रम में रामानंद अवधूत आश्रम के महंत लाभारामजी महाराज एवं होशियारपुर विहिप के प्रधान श्री सुरेश शर्मा सम्मिलित हुए, आश्रम में हवन व भंडारा भी हुआ। गुरदासपुर (पं.) में संकीर्तन यात्रा में नशे से बचने का संदेश दिया गया, सत्साहित्य-वितरण एवं बच्चों में नोटबुकों का वितरण किया गया। इसमें शिवसेना के राज्य सचिव हरविन्द्र सोनी शामिल हुए। छिंदवाड़ा में विशाल संत-सम्मेलन हुआ तथा गरीबों में भंडारा व वस्त्र वितरण किया गया।

केन्द्रीय कारागृह (जोधपुर) के बाहर मना अवतरण दिवस

बड़ी संख्या में जोधपुर पहुँचे साधकों ने तेज बारिश व आँधी-तूफान के बावजूद भी केन्द्रीय कारागृह की परिक्रमा की। जेल के मुख्य द्वार पर आरती व पूज्यश्री की मधुर याद में भजन-कीर्तन किया, जिससे वहाँ ऐसा माहौल बन गया कि मानो वह जेल नहीं कोई तीर्थस्थान हो।

सभी आश्रमों एवं अन्य कई स्थानों पर साधकों ने पूज्यश्री के उत्तम स्वास्थ्य हेतु महामृत्युंजय मंत्र का जप व हवन किया। अहमदाबाद में १०८ कुंडी महायज्ञ हुआ।

देशभर में निकाली गयीं संकीर्तन यात्राएँ

अवतरण दिवस पर निकाली गयीं भगवन्नाम संकीर्तन यात्राओं में भारतीय संस्कृति तथा संतों पर हो रहे कुठाराघात को दर्शाती विशेष झाँकियों द्वारा समाज को जागृत किया गया, साथ ही अवतरण दिवस के पर्चे, प्रसाद तथा सत्साहित्य आदि का वितरण हुआ। महाराष्ट्र में गोंदिया, पुणे, नागपुर, चांदवड जि. नासिक, राजस्थान में सागवाड़ा, उदयपुर, कोटा, भीलवाड़ा, बाड़मेर, जयपुर, बिहार में औरंगाबाद, पटना, मुजफ्फरपुर, हिमाचल प्रदेश में सोलन, ऊना, उत्तर प्रदेश में लखनऊ, कानपुर, उझानी जि. बदायूँ, पंजाब में गुरदासपुर, पटियाला, लुधियाना, हरियाणा में अम्बाला, फरीदाबाद, रेवाड़ी, हिसार, चंडीगढ़, दिल्ली में द्वारका, करोल बाग, रजोकरी, रोहिणी, सीलमपुर, छत्तीसगढ़ में धमतरी, रायपुर, बिलासपुर, मध्य प्रदेश में जबलपुर, ग्वालियर, रतलाम, भोपाल, इंदौर, देवास, छिंदवाड़ा तथा उत्तराखंड में देहरादून, हरिद्वार आदि स्थानों सहित देशभर में संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं।

गरीब-आदिवासियों में हुए भंडारे बाँटी गयीं जीवनोपयोगी वस्तुएँ

अवतरण दिवस पर देश-विदेश के सभी ४२५ आश्रमों में और अन्य अनेकों-अनेक स्थानों पर साधकों द्वारा भंडारों का आयोजन हुआ, जिनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं एवं गरीब-गुरबों ने भोजन-प्रसाद का लाभ लिया।

अहमदाबाद में गरीबों में भंडारा हुआ तथा गर्मियोंभर चलनेवाली पानी की प्याउओं का शुभारम्भ कर शीतल पलाश शरबत बाँटा गया। ग्वालियर आश्रम द्वारा भटपुरा, गांधीपुरा, माता का पुरा, स्टेशन का पुरा, सिरसा, केट, रेहट, खटिया का पुरा, गाँव का पुरा, बेरखेड़ा, जखोती, सपेरों का पुरा आदि गरीब-आदिवासी बस्तियों में भंडारा किया गया, जिनमें आदिवासी महिलाओं को साड़ी तथा आँवला रस की बोतलें दी गयीं। जामनगर (गुज.) में १०८ श्री आशारामायण पाठ, यज्ञ एवं गरीबों में भंडारा हुआ। करोलबाग-दिल्ली आश्रम द्वारा शहर में तथा अलीराजपुर (म.प्र.), सोलन (हि.प्र.), जोधपुर व उदयपुर (राज.) में गरीबों में भंडारा एवं शरबत वितरण हुआ। सोलापुर (महा.) में गरीबों में पलाश शरबत की बोतलें, जयपटना (ओड़िशा) में चप्पल, छाता

तथा पलाश शरबत वितरित किया गया। जौनपुर (उ.प्र.), अम्बाला (हरि.) व बैंगलोर के अस्पतालों में दूध, फल एवं सत्साहित्य का वितरण तथा गरीबों में भंडारा किया गया। सत्संग प्रचार सेवा मंडल, जम्मू-कश्मीर द्वारा गरीब बच्चों में कपड़े, कॉपी, पेन, तुलसी गोलियों के पैकेट, गिलास, बिस्कुट, हाथ पंखा आदि सामग्री बाँटी गयी। गोरेगाँव-मुंबई में भंडारे के साथ साड़ी, चटाई, तौलिया, नमक, शक्कर, चावल, दाल, तेल, मिठाई तथा नकद दक्षिणा दी गयी। रायपुर आश्रम (छ.ग.) द्वारा बच्चों में भंडारा हुआ। रायपुर के बाल मंडल, कन्या मंडल के विद्यार्थियों द्वारा प्रसाद एवं छाछ वितरण किया गया। सम्बलपुर (ओड़िशा) में गरीबों में टोपियाँ बाँटी गयीं। सहारनपुर (उ.प्र.) में गरीबों तथा वृद्धाश्रम में भंडारा हुआ। लड्डूगाँव, कालाहाँडी (ओड़िशा) के आदिवासियों-वनवासियों में पलाश की बोतलों के साथ नकद दक्षिणा तथा कोलकाता आश्रम में राशन, कपड़े (साड़ी आदि) तथा नकद दक्षिणा दी गयी। इंदौर में १२ स्थानों पर छाछ व शरबत वितरण हुआ तथा जल प्याऊ सेवा का शुभारम्भ भी हुआ। जीवन ज्योति स्कूल में भंडारा हुआ। आश्रम में श्री आशारामायण के १००८ पाठ हुए। सीतापुरी, बिसाली, ओखलेश्वर हनुमान मंदिर, सेंडल, मेंडल - इन ५ गाँवों के आदिवासियों में भंडारा तथा साड़ी, धोती, पैंट, शर्ट, टोपी आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण किया गया। नागपुर में शरबत, छाछ तथा सत्साहित्य का वितरण किया गया। गरीब परिवारों में गेहूँ, चावल, दाल, चप्पल, शक्कर, साड़ियाँ तथा अन्य रोजमर्रा की वस्तुएँ बाँटी गयीं। जिंद (हरि.) में वृक्षारोपण तथा अस्पतालों में फल वितरण किया गया। बैंगलोर में गरीबों को राशनकार्ड बनाकर दिये गये तुाराशन के साथ नकद दक्षिणा भी दी गयी। सहारनपुर के गरीबों में भंडारा व शरबत-वितरण तथा राउरकेला (ओड़िशा) में शरबत, खिचड़ी प्रसाद और अस्पतालों में फल व अन्य सामग्री वितरित की गयी। धार (म.प्र.) में कैदी उत्थान कार्यक्रम के अंतर्गत कैदियों में जीवन को उन्नत करनेवाला सत्साहित्य बाँटा गया।

रायपुर में शीतल जल की १२ प्याउएँ खोली गयीं तथा ठंडे पानी के मटकों का वितरण किया गया। ग्वालियर (म.प्र.) में बच्चों द्वारा तथा अजमेर, पुष्कर (राज.), पंडरी-रायपुर, खमतराई (छ.ग.) सहित सैकड़ों स्थानों पर साधकों द्वारा शीतल जल प्याऊ सेवा का शुभारम्भ हुआ। बोईसर जि. ठाणे, मालेगाँव, सोलापुर, बोरीवली-मुंबई (महा.), बैंगलोर, बिदर (कर्नाटक), सोरठीयावाडी जि. राजकोट, डाकोर जि. खेड़ा, राजकोट (गुज.), हिमायतनगर-हैदराबाद, राँची, कानपुर, भोपाल आदि कई स्थानों पर शरबत तथा छाछ वितरण किया गया। महिला उत्थान मंडल, भिलाई द्वारा अवतरण सप्ताह के उपलक्ष्य में गरीब बच्चों को भोजन कराया गया तथा सुसंस्कार-सिंचन हेतु प्रोजेक्टर द्वारा सत्संग और कीर्तन कराया गया।

उपरोक्त अवतरण दिवस के निमित्त हुए सेवाकार्यों का विवरण केवल २० से २५ अप्रैल तक प्राप्त हुई जानकारियों के आधार पर है। इनके अलावा देश-विदेश में हुए विभिन्न सेवाकार्यों का विवरण आना सतत जारी है, जिसे हम स्थानाभाव के कारण नहीं दे पा रहे हैं। विस्तृत जानकारी एवं तस्वीरों के लिए देखें इस पत्रिका के आवरण पृष्ठ और वेबसाइट - www.ashram.org

ग्रीष्मकालीन 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' का शुभारम्भ

बच्चों को तेजस्वी व संस्कारी बनाने हेतु पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से गर्मियों की छुट्टियों में होनेवाले विद्यार्थी शिविरों का शुभारम्भ हो गया है। २२ से २५ अप्रैल तक अहमदाबाद आश्रम में बालकों तथा सती अनसूया आश्रम में बालिकाओं का शिविर हुआ। इसमें बच्चों को जैविक घड़ी के अनुरूप दिनचर्या, त्रिकाल संध्या, जप, ध्यान, सूर्यस्नान, योगासन, हवन आदि करवाकर तथा विडियो सत्संग का लाभ दिला के संस्कारित किया गया। उन्हें

परीक्षा में सफलता की सरल युक्तियाँ भी बतायी गयीं। शिविर के आखिरी दिन खेल व वक्तृत्व स्पर्धा, आध्यात्मिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताएँ हुईं और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कोटड़ा आदिवासी क्षेत्र के ८१ बच्चों ने भी इस शिविर में भाग लिया। इनको अंतिम दिन बूँदी का प्रसाद, चप्पल व नकद रुपये दिये गये। वल्लभीपुर आश्रम (गुज.) में ३ दिवसीय, बड़ौदा में २ दिवसीय तथा गाजियाबाद में १ दिवसीय शिविर सम्पन्न हुए। जून माह तक शिविर आयोजित होंगे। अपने बच्चों को इन शिविरों का लाभ दिलाने हेतु अपने नजदीकी आश्रम या बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद आश्रम का सम्पर्क करें।

श्रीराम नवमी पर हवन, भंडारे व संकीर्तन यात्राएँ

षड्यंत्र के तहत फँसाये गये निर्दोष पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईं एवं साधकों की शीघ्र रिहाई हेतु चैत्री नवरात्रि के दौरान देश में अनेक स्थानों पर जप, पाठ, उपवास व हवन-यज्ञ किये गये। नवरात्रि के अंतिम दिन श्रीराम नवमी पर हवन-यज्ञों की पूर्णाहुति के साथ भंडारे भी हुए। श्रीराम नवमी के दिन देश के कई स्थानों में प्रभातफेरियाँ तथा संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं। जोधपुर में विश्व हिन्दू परिषद के जिला मंत्री श्री भागीरथ चौधरी ने कीर्तनयात्रा में भाग लिया। अहमदाबाद आश्रम में १०८ कुंडी होमात्मक सहस्रचंडी महायज्ञ हुआ।

सत्संग प्रचार सेवा मंडल, जम्मू-कश्मीर द्वारा 'सच्चाई बताओ, सनातन संस्कृति बचाओ' अभियान चलाया गया, जो जम्मू से शुरू होकर ११२ किलोमीटर दूर उधमपुर जिले के टन्था गाँव तक चलाया गया। इस अभियान के द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर स्थानीय लोगों के साथ ही पर्यटकों व सैनिकों को भी षड्यंत्र की सच्चाई बतानेवाले पर्चे, अखबार आदि सामग्री का वितरण किया गया। १५ अप्रैल को हनुमान जयंती पर भी अनेक स्थानों पर संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं, प्रोजेक्टर पर सत्संग भी दिखाया गया।

जंतर-मंतर, दिल्ली में निरंतर २६० दिनों से चल रहे धरने में श्रीराम नवमी व हनुमान जयंती पर हवन-जप आदि हुआ। अखंड सुप्रचार यात्राएँ गाजियाबाद में लगातार पिछले १६० दिनों से, भुवनेश्वर (ओड़िशा) में ५० दिनों से और नागपुर में २७ दिनों से चल रही हैं।

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥

'हे पुरुषश्रेष्ठ ! दुःख-सुख को समान समझनेवाले जिस धीर पुरुष को ये इन्द्रिय और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते, वह मोक्ष के योग्य होता है ।' (गीता : २.१५)

परमात्मा तो नित्य और एकरस है। जो भी होगा हमारे विकास के लिए होगा। सिनेमा में सुंदर मकान, बगीचे दिखते हैं। हो-हो के चले जाते हैं। जो मूर्ख है, उन्हें रोके रखना चाहता है वह दुःखी होगा। जो अपने ढंग का देखना चाहता है वह भी दुःखी होगा। जो दिख रहा है, दिख रहा है... बदल रहा है, बदल रहा है। जो आता है आने दो, जाता है जाने दो। बनता है बनने दो, बिगड़ता है तो बिगड़ने दो। जो धन मिल गया, मिल गया। जो चला गया, उसके लिए रोते क्यों हो ! जो मान मिल गया मिल गया, चला गया तो चला गया। इसीका नाम तो दुनिया है।

खून पसीना बहाता जा, तान के चादर सोता जा।
यह नाव तो हिलती जायेगी, तू हँसता जा या रोता जा ॥

तो काहे को रोयें ! वाह-वाह ! क्यों न करें ! अपनी बुद्धि में भगवान के ज्ञान का प्रकाश ले आओ। जो बीत गया उसको याद करके शोक मत करो। मैं पहले ऐसा सुखी था, यह दुःख मिला, अभी ऐसा है। नहीं-नहीं, जो बीत गया, अभी हमारे पास नहीं है उसके पीछे क्यों मरें !

भविष्य हमारे सामने नहीं है, वर्तमान में आनंदित करो, परिमार्जित करो अपने मन को । रसमय जीवन... जिह्वा में भगवद्रस, मन में भगवद्रस भरो। मधुर बोलेंगे, सारगर्भित बोलेंगे, स्नेहयुक्त बोलेंगे, गीता के ज्ञान से भरकर वाणी बोलेंगे। हो गया परिमार्जन ! मन में किसीका बुरा नहीं सोचेंगे, किसीका बुरा नहीं चाहेंगे और कोई भी हमारा बुरा करे तो वह व्यक्ति सदा के लिए ऐसा नहीं है, ऐसी समझ जाग्रत रखेंगे। कोई किसीको दुःख देता है तो दुःख सामनेवाले को मिले-न मिले, दुःख देनेवाले का दिल तो दुःख देने के विचार से गंदा होता है और कोई किसीको सुख देता है या भला करता है तो सामनेवाले का कब-कितना भला हो भगवान जानें लेकिन भलाई के विचार से उसका खुद का दिल तो भला होता है न !

जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा है, जो होगा वह भी अच्छा होगा यह नियम प्रभु का है। हम मन के चाहे पर अड़ जाते हैं इसीलिए दुःख होता है, तनाव होता है। बच्चा मनचाही चाहता है इसीलिए दुःखी होता है। माँ बच्चे को रगड़-रगड़ के शुद्ध करना चाहती है लेकिन बच्चे को अच्छा नहीं लगता, स्कूल भेजना चाहती है लेकिन अच्छा नहीं लगता फिर भी रोते-रोते भी स्नान तो करना पड़ता है, रोते-रोते भी स्कूल जाना तो पड़ता है। तो आप अपना मनचाहा परिवर्तन मत करो, परिमार्जन होने दो।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के समर्थन में संत-समाज एवं गणमान्य हस्तियाँ

शंकराचार्य श्री निश्चलानंदजी

जगद्गुरु श्री पंचानंद गिरिजी

श्री नित्यानंदजी

श्री चक्रपाणिजी

पूज्य बापूजी की रिहाई हेतु राष्ट्रपतिजी को ज्ञापन देते हुए संतों का प्रतिनिधि मंडल

डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

श्री अशोक सिंहल

डॉ. प्रवीण तोगड़िया

श्री देवेन्द्रानंदजी

डॉ. जयंत आठवलेजी

श्री शांतिगिरिजी

श्री परमात्मानंदजी

श्री शम्भुनाथ शास्त्रीजी

बाबा हरपालसिंहजी

श्री धनंजय देसाई

श्री विश्वेश्वरानंदजी

श्री दिनेश भारतीजी

श्री रामेश्वर शास्त्री

श्री कृपारामजी

साध्वी सरस्वतीजी

साध्वी कात्यायनीजी

श्री सुरेश चव्हाणके

गोविंदा

श्री मुकेश खन्ना (शक्तिमान व भीष्म पितामह)

श्री सुरेन्द्र पाल (द्रोणाचार्य व दक्ष प्रजापति)

फिरोज खान (अर्जुन)

श्री पारस अरोड़ा (बाल शिवाजी)

श्री मेघन जाधव (श्रीकृष्ण)

उल्का गुप्ता (झाँसी की रानी)

अवतरण दिवस पर भारतभर में निकलीं भगवन्नाम संकीर्तन यात्राओं की एक झलक

चंडीगढ़

पौंटा साहिब (हि.प्र.)

जलगाँव (महा.)

रोहिणी-दिल्ली

रतलाम (म.प्र.)

कठुआ (जम्मू-कश्मीर)

हिसार (हरि.)

फरीदाबाद

भुवनेश्वर

सागवाड़ा (राज.)

नादौन (हि.प्र.)

भोपाल

ओंजल, जि. नवसारी (गुज.)

आगरा

पटना

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

अवतरण दिवस पर भयंकर बारिश व आँधी-तूफान के बावजूद हजारों साधकों ने की जोधपुर जेल की परिक्रमा

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2014

देश-विदेश में मनाया गया पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस अर्थात् 'विश्व सेवा-सत्संग दिवस'

न्यूजर्सी | ब्रॉम्पटन (कनाडा) | सिलिकॉन वैली | बोस्टन

गरीबों-आदिवासियों में भंडारे के साथ हुआ कपड़े, अनाज, राशन सामग्री, बर्तन, छाता, चप्पल आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं तथा शरबत-बोतल एवं नकद रुपयों का वितरण ।

ग्वालियर | गोरेगाँव-मुंबई | जयपटना (ओड़िशा) | कोलकाता

लइड़गाँव, जि. कालाहांडी (ओड़िशा) | जिंद (हरि.) | जमशेदपुर (झारखंड) | बड़ौदा

थर्मल, जि. खेड़ा (गुज.) | लखनऊ | इंदौर | करोलबाग-दिल्ली

गोरखपुर (उ.प्र.) | बैंगलोर | शाजापुर (म.प्र.) व जौनपुर (उ.प्र.) के अस्पतालों में फल, दवाई आदि का वितरण

देशभर में हुआ गर्मियों में चलनेवाले शीतल पलाश आदि शरबत व छाछ वितरण एवं जल प्याऊ सेवा का शुभारम्भ

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें ।

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. ✽ Posting at ND PSO on 18th & 19th of E.M. ✽ Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.